सत्यमेव जयते

अवध गरिमा

14वां अंक

जनवरी 2023

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या

संयोजक
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
विजया VIJAYA
देना DENA

15वीं अर्द्ध–वार्षिक समीक्षा बैठक

बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या के संयोजन में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फ़ैज़ाबाद की 15वीं अर्द्ध–वार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन दिनांक 26.08.2022 को सभागार, होटल पंचशील, देवकाली बाईपास, अयोध्या में किया गया.

सत्यमेव जयते

अवध गरिमा

जनवरी 2023

अवध गरिमा का 13वां अंक

संयोजक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

संरक्षक : अनिल कुमार झा
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या एवं क्षेत्रीय प्रमुख, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

संपादक : नीरज कुमार सिंह
सदस्य सचिव, नराकास, अयोध्या एवं प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

संपादन मंडल :

संजयधर द्विवेदी
कार्यक्रम अधिशासी
आकाशवाणी

रतन कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया

सुनील कुमार पटेल
प्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब नैशनल बैंक

रजत कुमार,
पी. जी. टी. (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय

जगन्नाथ तिवारी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
भारत संचार निगम लिमिटेड

मयंक तिवारी
पी.जी.टी. (हिंदी)
जवाहर नवोदय विद्यालय

संपर्क : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या, बड़ौदा भवन, साकेतपुरी आवासीय योजना, देवकाली बाईपास, पोस्ट अयोध्या, जिला अयोध्या – 224123 ईमेल : rajbhasha.faizabad@bankofbaroda.co.in

अनुक्रमणिका

इस अंक में...

- सहायक निदेशक महोदय का संदेश... 2
- अध्यक्ष महोदय का संदेश..... 3
- सदस्य सचिव की कलम से.... 4
- हिंदी हमारी पहचान – आलेख 5
- कल–आज–कल – कविता 6
- समय चक्र – कविता 7
- जीने की बातें – कविता 8
- ऐ जिंदगी – कविता 9
- निकलो बाहर, दुनिया ढूंढ रही है – कविता 10
- अंधा कर्म बुरा फल – आलेख 11
- 'अनुश्री' से – हिन्दी – कविता 13
- दास्तां – हर जरूरतमंद की – कविता 14
- श्री मृगेंद्र राज : साक्षात्कार 15
- राजभाषा शील्ड 2021–22 नराकास, फैज़ाबाद 17
- गतिविधियां 18
- 15वीं अर्द्ध–वार्षिक समीक्षा बैठक 20–21
- अयोध्या में अयोध्या – आलेख 22
- तलाश – कविता 23
- नकद–रहित अर्थव्यवस्था – सामयिकी 24
- धर्मवीर भारती – साहित्यिक स्तंभ 29
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या – सदस्य कार्यालयों की सूची ... 34

पत्रिका में छपे आलेख रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। समिति का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र–2),
302, सी.जी.ओ.भवन–1, कमला नेहरू नगर,
गाजियाबाद –201002
दूरभाष/फैक्स–0120–2719356
ई–मेल–ddriogzb-dol@nic.in
rionorthgzb@gmail.com

सत्यमेव जयते

फा.सं.–क्षे.का.का.उ./पत्रिका–संदेश/457 दिनांक – 05/01/2023

संदेश...

अत्यंत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा का कार्यान्वयन समिति, अयोध्या संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु निरंतर सराहनीय प्रयास कर रही है। इसी क्रम में नराकास अयोध्या अपनी गृह पत्रिका 'अवध गरिमा' के चौदहवें अंक जनवरी, 2023 का प्रकाशन करने जा रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि 'अवध गरिमा' का यह अंक भी संग्रहणीय होने के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा। पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों, रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(अजय कुमार चौधरी)
सहायक निदेशक (कार्यान्वयन)

अध्यक्ष महोदय का संदेश.....

प्रिय साथियो,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या की छमाही पत्रिका 'अवध गरिमा' के माध्यम से आपसे संवाद करना हमेशा ही एक सुखद अनुभव होता है। नराकास के सदस्यों एवं पत्रिका के सुधी पाठकों तक अपनी बात पहुँचाने का 'अवध गरिमा' एक सशक्त माध्यम है, जिससे अयोध्या स्थित कार्यालयों, विद्यालयों, शाखाओं एवं संस्थानों में आयोजित होने वाली गतिविधियों को आप सभी तक पहुंचाने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। इसी क्रम में 'अवध गरिमा' का 14वां अंक आप सबके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

पिछले छमाही बैठक के दौरान समिति ने 'तुलसी भाषा सम्मान' का प्रारम्भ किया है जोकि समिति के लिए हर्ष के साथ–साथ गौरव का भी विषय है। मैं आशा करता हूँ कि सदस्य कार्यालयों के सहयोग से यह समिति भविष्य में भी ऐसे न्वोनमेषी पहल करती रहेगी। 'अवध गरिमा' का यह अंक भी समिति के सदस्यों द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के प्रकाशन के साथ–साथ सदस्यों द्वारा अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त किये गये विचारों एवं भावनाओं का संग्रह है।

'अवध गरिमा' का प्रकाशन हमारी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। पत्रिकाएं भावनाओं एवं विचारों के संग्रह के साथ–साथ नई चेतना का भी संचार करती है। साथ ही, स्टॉफ सदस्यों को अपने अंदर छुपी हुई प्रतिभा के विस्तार हेतु एक समुचित मंच भी प्रदान करती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सभी परस्पर सहयोग और एक सुनियोजित योजना के तहत कार्य करते हुए राजभाषा हिंदी के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान आगे भी देते रहेंगे।

वित्त वर्ष 2021–22 हेतु राजभाषा शील्ड प्राप्त सभी सदस्य कार्यालयों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाए।

(अनिल कुमार झा)
अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या
एवं क्षेत्रीय प्रमुख, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

सदस्य सचिव की कलम से...........

प्रिय साथियो,

अपनी भाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। अपनी भाषा में मौलिक लेखन बहुत ही सहज और स्वाभाविक होता है। हिंदी ने सभी भारतवासियों को एक सूत्र में पिरोकर सदैव अनेकता में एकता की भावना को पुष्ट किया है। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता व सुबोधता है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है वहीं लिखा जाता है।

अवध गरिमा के इस 14वें अंक में हमने नराकास, अयोध्या के सदस्य कार्यालयों में आयोजित कार्यक्रमों/गतिविधियों की झलकियों के प्रकाशन के साथ–साथ सदस्य कार्यालयों के स्टॉफ सदस्यों द्वारा रचित आलेख, कविताओं, कहानियों आदि का संकलन किया है। हम आशा करते हैं कि इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाएं आपको पसंद आएंगी।

अवध गरिमा के अनवरत सफल प्रकाशन के लिये हमें आपकी प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों की आवश्यकता है, इससे हमारा उत्साहवर्धन होता है। अत: पत्रिका के सभी पाठकगणों से हमारा सादर अनुरोध है कि पत्रिका को प्रभावशाली और आकर्षक बनाने हेतु हमें अपने अनमोल विचार / सुझाव प्रेषित कर हमारा उत्साहवर्धन करते रहें।

शुभकामनाओं सहित !

(नीरज कुमार सिंह)
सदस्य सचिव,
नराकास, अयोध्या
एवं प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ़ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

हिंदी हमारी पहचान

मनोज
प्रशासनिक अधिकारी
भारतीय जीवन बीमा निगम
मण्डल कार्यालय, अयोध्या

किसी राष्ट्र की पहचान उसकी संस्कृति और भाषा द्वारा होती है। भारत एक बहुभाषी एवं विविधताओं से भरा देश है। विविध संस्कृतियाँ, सभ्यताएं और परंपराएं इस धरा की पहचान हैं। हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं। अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियाँ हमारी ना केवल विरासत हैं वरन हमारी ताकत भी हैं। भारत को एक सूत्र में पिरोए रखने वाली हिंदी भाषा हमारी सांस्कृतिक धरोहर, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सद्भाव की सँवाहिका है। हिंदी भाषा को राजभाषा ही नहीं अपितु आम जनता की संपर्क भाषा बनने का भी गौरव प्राप्त है। वस्तुतः हिंदी जनसाधारण की भाषा है। हिंदी सरल और दिलों को जोड़ने वाली भाषा है।

हिंदी व अन्य भाषाओं ने भारतीय भाषाओं से मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। स्वाधीनता आंदोलन के समय से ही राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है हमारी हिंदी। गीतकार डॉ लक्ष्मी शंकर मिश्र "निशंक" के शब्दों में–

भारत माता के मस्तक पर
जो शोभित अरुणिम बिंदी है।
सौभाग्य दीप्त होता जिससे
वह राष्ट्र भारती हिंदी है।

हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी के गौरवशाली इतिहास, भारतीय संस्कृति में इसके योगदान, भारत के वृहद भाग में इसकी स्वीकार्यता पर विचार करते हुए 14 सितंबर 1949 को देवनागरी में लिखित हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया। संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा हिंदी व लिपि देवनागरी होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयोग रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जाती है।

हिंदी की लोकप्रियता केवल राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर भी पहुंच चुकी है। संयुक्त राष्ट्र महासभा के गत दो वर्षों के वार्षिक सत्रों में, 73 वें सत्र में पूर्व विदेश मंत्री स्वर्गीय सुषमा स्वराज जी व 74वें सत्र में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा संबोधन हिंदी भाषा में किया गया और विश्व पटल पर हिंदी भाषा की गरिमा नए शिखर पर पहुँची। हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

हिंदी बोलचाल की भाषा का स्थान ले चुकी है। वर्तमान परिस्थिति में ई–माध्यमों में भी हिंदी का प्रयोग अधिक सुगम हो चुका है। हिंदी में राजकीय कामकाज निष्पादन हेतु उपयुक्त और पर्याप्त पारिभाषिक शब्दावली एवं साधन हैं। सूचना तकनीक से हिंदी के प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण तैयार हो रहा है। हमें इन सुविधाओं का उपयोग करते हुए हिंदी को सरलतम रूप में अपनाकर अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने का प्रयास करना चाहिए। तभी हम अतीत के गौरव को हासिल कर विश्व गुरु के पद पर प्रतिस्थापित होने के लिए अग्रसर हो सकेंगे।

जयतु हिंदी जयतु भारती!

*****

कल–आज–कल

दशरथ यादव
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (गणित)
केंद्रीय विद्यालय, अयोध्या छावनी

सबको जाना है छोड़ यहां,
अपने सुख–दुःख का भार प्रिये।

कर लो जो करना आज उसे,
कल पर किसका अधिकार प्रिये॥

जो कठिन समस्याएं कल थीं,
वो आज बनी हथियार प्रिये।

हर एक समस्या का हल है,
कर शिद्दत से प्रयास प्रिये।

हम अगर समस्या न समझें,
प्रयास सभी बेकार प्रिये॥

जो खुशियाँ आज बिखेर रहीं,
कल वही मौत की धार प्रिये॥

कल तक खुशियाँ पुलकित होती थीं
घर आँगन फुलवार प्रिये।

पर आज वही सब बिखर रहीं
मशहूर सरे बाजार प्रिये॥

किसने देखा कल क्या होगा,
इसलिए जियो जी भर के तुम।

कल की चिंता में जाने दो मत,
समय आज बेकार प्रिये॥

कहते हैं समय लौटता है,
अवसर भी मिलते कई यहाँ।

पर पता नहीं किस वक्त कहाँ पर,
रुक जाए संसार प्रिये॥

हर दिल मानवतावादी हो,
उपजे सम्मति, सहकार प्रिये।

आने वाला कल अच्छा हो,
उम्मीद है बारम्बार प्रिये॥

*****

समय चक्र

मनोरमा मिश्रा
केंद्रीय विद्यालय
अयोध्या छावनी

समय का पहिया अनवरत चलता जा रहा है
मुट्ठी में भरी रेत जैसा फिसलता जा रहा है
अतीत बदल सकता नहीं केवल पछताने से
नहीं सुधर सकता भविष्य केवल चिंता करने से
तकदीर बदल जाती है वर्तमान सुधर जाने से
पीछे मुड़कर देखा तो केवल पछतावा है
आगे बढ़ कर देखा तो चमकता एक सितारा है
समाज कुछ ऐसा की निंदा केवल करता है
गुण की है पहचान नहीं अवगुण ही खोजा करता है
है स्वार्थ में लिप्त सदा समझौता नहीं करता है
बाधा बनता सदा प्रगति में
द्वंद खोजता रहता है
ऐसी छोटी–छोटी बाधाएं आती रहती जीवन में
पार करे इन बाधाओं को राह बनाएं स्वयं बड़े
हो नीति चाणक्य की लक्ष्य हमेशा अर्जुन का
ज़िद हो ध्रुव प्रहलाद सरीखा ज्ञान विदुर के जैसा हो
दुर्गम से दुर्गम राहों में राह स्वयं बनाना है
आगे बढ़ते जाना है आगे बढ़ते जाना है

*****

जीने की बातें

उमेश कुमार
अवर अभियंता (सिविल)
भारत संचार निगम लिमिटेड
कार्यालय–महाप्रबंधक दूरसंचार, अयोध्या

देखा है मैंने पत्थरों को रोते हुए,
लेकिन नहीं देखा रोते हुए विश्वास को।
सभी जीतों को जीत नहीं मानना चाहिये,
न ही सभी हारों को हार ही।

जिंदगी के मुकम्मल हिस्से में,
जो जख्मों को लिए फिरते हैं।
मत सोचना तृष्णा किसी के लिए,
औषधि लेकर वापिस आयेगी।

आसान नहीं है जीना,
कितनी बार कौन रीत जाता है।
कौन भर जाता है,
लेकिन रीतता अवश्य है।

भर जाता अवश्य है,
अनबुझ प्यास की कभी
मत करना आकांक्षा।
मेरे लोग धरती छोड़कर उड़ रहे हैं,
सिर्फ मैं आसमान में नहीं उड़ सका।

पंख होते हुए भी,
हैरान हूं किस तरह उड़ रहे हैं
बिन पंखों के लोग।

करते हैं जो कमरतोड़ मेहनत
उन्हें एहसास ही नहीं होता है,
आती हैं कितनी मुश्किलें राहों में,
जीने की हविस, प्यास ही मर गयी।

सचमुच मैंने पत्थरों को रोते देखा है,
लेकिन सच को नहीं देख पाया।
और जो जीते हैं,
वे शक्तिशाली नहीं होते हैं।

हारने वाले कमजोर नहीं होते हैं
मैंने बहुतों को निरंतर
रीता हुआ देखा है।
इसलिये तो मैंने पत्थरों को
रोते हुए देखने का सौभाग्य पाया है।

*****

ऐ जिंदगी

दीपक बाजपेयी
सिपाही/जीडी,
63वीं वाहिनी के.रि.पु.बल

जब जब तेरे नजदीक आता हूँ
खुद को खुद से कितना दूर पाता हूँ
सुबह की पहली किरण हो,
या हो शाम कि धूमिल खामोशी
सोचता हूँ कुछ
कुछ और ही पाता हूँ
ऐ जिंदगी,
जब जब तेरे नजदीक आता हूँ
खुद को खुद से कितना दूर पाता हूँ॥

एक मैं ही नहीं हूँ इस संसार में विवश
जीवन के हर रूप, हर अभिरूप
है सभी को लपेटे अजीबो कश्म-कश
चाहकर भी नहीं निकल पाता है कोई
जिंदगी इतनी तेज दौड़ेगी ना सोचा कभी
ठहराव भी आने पर नहीं रूक पाता है कोई
ऐ जिंदगी,
जब जब तेरे नजदीक आता हूँ
खुद को खुद से कितना दूर पाता हूँ॥

सोचा था कि तुमसे मिलूंगा जल्द ही
सबको पता था कि ये मन का भ्रम है
और भ्रम टूट जाता है, कितना ही रोके कोई
खैर ..ये सब जिंदगी के परीक्षाएँ हैं
एक के बाद एक पार हो जाएंगे,
ऐसी आशायें हैं
जिंदगी ज्यादा तो कुछ नहीं सिखलाती है
अपनों से दूर होने का दर्द बखुबी बतलाती है
धर्म, पंथ, जाती, सब के सब हैं बेकार
मानव सेवा ही है इसका एकमात्र उपचार
यही बात दुनिया और
अपने आप को समझाता हूँ
ऐ जिंदगी,
जब जब तेरे नजदीक आता हूँ
खुद को खुद से कितना दूर पाता हूँ॥

****

निकलो बाहर, दुनिया ढूंढ रही है

गीतांजलि
प्रबंधक
पंजाब नैशनल बैंक,
अयोध्या मंडल

कब तक जूझती रहोगी मेज पर पड़े हुए पन्नो से,
कब तक अलसाती रहोगी कुर्सियों पर बैठे बैठे,

जानती हूँ बहुत काम है तुम्हे,कहाँ आराम है तुम्हे,
तुम्हारी फाइले, तुम्हारे प्रोपोजल्स,
तुम्हारी कलम दौड़ती रहती है,
तुम बैठी भी हो तो फाईले दिमाग में दौड़ती है,
हवा के झोकों से तुम्हारे मेज पर बिखरे हुए पन्ने,
पेपरवेट से ऐसे दबे हुए है मानो किसी चिड़िया को बांध दिया है किसी ने,
ऐसा लगता है वह बेताब है उड़ने के लिए,
फड़फड़ा रहे हैं तुम्हारी मेज से दूर जाने के लिए,
आजाद हो जाना चाहते हैं,

उड़ना चाहते है लेकिन बिखेर रखा है तुमने,
कब समेटोगी इन्हें, कब रख दोगी कलम,
और उठोगी कुर्सी छोड़कर निकलोगी बाहर,
खुली हवा में खड़े होकर दोनों हाथ फैलाने,
उड़ने के लिए, उड़तें उड़तें किसी नदी के किनारे,
किसी समुंदर के किनारे ठंडी रेत पर बैठने,
किसी पहाड़ के बीच मे बने हुए झील के किनारे,
ठंडे पानी मे पाँव डालकर छप छप करने,

उठाओ अपना बैग निकलो बाहर,
दुनिया ढूंढ रही है अपनी खुशी और तुम्हे ॥

अंधा कर्म बुरा फल

रतन कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

सारी दुनियाँ कहती है उर्जा– द्रव्यमान के रूपांतरण का नियम सही है। सबने अल्बर्ट आइंस्टीन के इस कथन को मान लिया। इतना ही नहीं इसका प्रायोगिक परिणाम भी दुनिया के सामने रखा गया। बड़ा भयंकर प्रयोग– परमाणु बम का निर्माण! हाय रे, प्रयोगकर्ता वैज्ञानिक! तुमने रेडियोधर्मी तत्व के द्रव्यमान को ऊर्जा में रूपांतरित किया, पुनः उससे हिरोशिमा और नागासाकी के मानवीय द्रव्यमान को नष्ट किया। बताओ पुनः मानवीय ऊर्जा कहाँ मिली?

उर्जा द्रव्यमान के सिद्धांत की खोजोपरांत आइंस्टीन ने खुद कहा था, इसका प्रयोग अगर रचनात्मक किया गया तो मानव जीवन आसान व सुखी तथा संपन्न होगा, अगर नकारात्मक हुआ तो विनाश का कारण बनेगा। एटम बम के खोजोपरांत अमेरिका द्वारा जापान पर एटम बम गिराए जाने से आइंस्टीन का हृदय इतना आद्र हुआ कि जीवन को समुन्नत बनाने व मानवीय सीख देने हेतु वे कला व साहित्योन्मुखी हो गये।

महाभारत युद्ध में कौरव दल की ओर से लड़ रहे संबंधियों पर तीर चलाने की बात सोचकर अर्जुन के मन में जब अपनत्व का भाव जाग उठा कि वह अपने सगे संबधियों का ही संघार करने जा रहा है तब उसका हृदय विषाद से भर गया और वह युद्ध करने से इनकार करने लगा। यह सोचकर कि–

आचर्या: पितर: पुत्रास्तथैव च पिताम: ।
मतुला: श्वशुरा: पोत्रा: श्याला: सबंधिनतस्था ॥
एतान्त हन्तुमिच्छामी च्वतोअपि मधुसूदन।
अपि त्रैलोक्यराजस्य हेतो: किं नु महीकृते ॥

इस मनोदशा को समझकर श्री कृष्ण ने कहा था ना तो आत्मा का निर्माण किया जा सकता है और न विनाश ही। मृत्यु पश्चात तो आदमी का चोला (शरीर) परिवर्तित होता है। इसलिए तुम्हें इन सभी भ्रांतियों व मोह से दूर होकर सत्य धर्म व न्याय की रक्षा के लिए युद्ध करना चाहिए।

मैं अब एक सवाल समस्त भारतवासियों से पूछना चाहूँगा। मानवीय अस्तित्व के रक्षार्थ जनसंख्या नियंत्रण क्या मानवीय धर्म से जुड़ा नहीं है? सृष्टि के रक्षा के लिए ही श्री कृष्ण को गीता का उपदेश देना पड़ा था। गहराई से सोचें तो जीवन सिर्फ संभावनाएँ देता है। हम उस संभावनाओं को किस रूप में ग्रहण करते हैं, यह हमारे ऊपर निर्भर करता है। इस विषय पर हमारी जड़ता हमें और अधार्मिक बनाती है, जबकि चेतनता धार्मिक बनाती है। सच कहें तो जीवन संबंधगत आधार नहीं, बल्कि संबंधगत प्रबंधन है। धर्म परंपरा नहीं निर्णय और संकल्प है विकास की। और कल तक की हुई गलती की अपुनरावृत्ति ही हमार मानवोचित धार्मिक कर्म है।

संप्रति संतुलित व सुखी वैश्विक समाज के लिए जनसंख्या नियंत्रण सबसे बड़ा धार्मिक कर्म है। आप कहेंगे यह दुष्कर है। आपका इतिहास बताता है इस संस्कृति में दुष्कर कुछ नहीं तो फिर कथित संभावना "संतुलित वैश्विक समाज" के संभाव्य पर क्यों नहीं जोड़ देते। आप कहेंगे सशक्त इतिहास बनाने के लिए सशक्त वर्ग बनाना जरूरी है। इसलिए जनसंख्या अनियंत्रित कर वर्गवाद को बढ़ावा दे रहा हूँ। जरा निकृष्ट सोच से ऊपर उठाकर अपने पूर्वजों के उस महान कथनों पर विचार करें, जिसने कहा है – वसुधैव कुटुंबकम, मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर करना,

मानव मानव एक है। कितना व्यष्टिगत सोच है! इसलिए आइये जनसंख्या नियंत्रित कर संतुलित विकासोन्मुख समाज का निर्माण करें। वास्तव में कोई कार्य असंभव नहीं। यदि हम जीवन के व्यापक सत्य को समझते हैं तो कोई–ना–कोई उपाय ढूंढा ही जा सकता है, निराकरण निकाला ही जा सकता है। मत भूलें आप युवा हैं; आपके वृषभ पर भार है– परिवार का, समाज का, राज्य का, राष्ट्र का, विश्व का, इतना ही नहीं पूरे ब्रह्मांड का!

मुझे डर है कहीं आप इस बात को हँसी में न उड़ा बैठें। दुनियाँ उड़ाती आयी है आप भी ना उड़ा बैठें– सिगरेट के धुएँ की तरह! इसमें निकोटीन तो है नहीं कि हानिकारक होगा! आज कल सिगरेट के डब्बों पर महीन अक्षरों में लिखा होता है Smoking is injurious for health लेकिन फिर भी उसकी बिक्री दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है। एक बार मैंने अपने एक साथी, जो धूम्रपान नहीं करने का कसम खाया था का ध्यानाकर्षण कथित वाक्य की और करवाया। वह बोला यार डिब्बा का रंग एवं पैकिंग इतना बढ़िया होता है कि पीते वक्त यह वाक्य मंद पड़ जाता है। भला इस युवक से आप क्या अपेक्षा कर सकते हैं! ऐसे लत वाले व्यक्ति जनसंख्या नियंत्रण में कितना सहयोग करेंगें!

आजकल हर चौराहे व नुक्कड़ पर जहाँ चार व्यक्ति बैठे हो वहाँ यह बात अक्सर सुनी जा सकती है यदि मैं इतने बड़े परिवार का भार उठा सकता हूँ तो एक बच्चे का और क्यों नहीं! आजकल यह और और का सवाल गुणात्मक रूप लेता जा रहा है। यही कारण है कि हमारे देश की जनसंख्या जो आजादी के समय मात्र 39 करोड़ था संप्रति 140 करोड़ हो गई है। हमें यह सोचना होगा कि हमारे देश का संसाधन क्या इतनी बड़ी जनसंख्या का भरण–पोषण कर सकने में सक्षम है; उसे उचित शिक्षा देकर अच्छा मानव संसाधन बना सकने योग्य है। इसी बात को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने जनसंख्या नियंत्रण कमेटी भी बिठा दी। क्या सचमुच बिना कठोर कदम उठाए हम इस पर नियंत्रण कर सकते हैं। कतई नहीं! जबतक देश के सभी व्यक्ति इस मिशन को अपना मिशन समझकर, कुत्सित स्वार्थ से ऊपर उठकर इससे ना जुडें। जनसंख्या वृद्धि रोकने में सहयोग करें।

आज भी वृद्ध लोग बच्चों को किस्सा सुनाते हैं कि वामन ने तीन ही डग में सारी पृथ्वी माप कर महाबली राजा भोज को रसातल में भेज दिया था। असल में स्वार्थ व अहंकार का अंधापन ही इस समस्या का कारण था। मैं पूछता हूँ, क्यों नहीं इन बच्चों को अरबों वामन से डराया गया। चूंकि उनके पिता ने ऐसा नहीं किया। इसलिए वह हम पर छोड़कर निवृत होना चाहता है। उसे गर्व है कि उसने कुंदन, कुंदकली कुंदवल्लभ, कुंददंड वगैरह–वगैरह को जन्म दे दिया। उन्हें फख्र ज्यादा इन बातों का है के वे इतने सारे बच्चे के पिता हैं। वह मूर्ख है अथवा अनपढ़! इसका उसके ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ता! कोई अफसोस नहीं! कोई ग्लानि नहीं!

बड़ी विचित्र विडंबना है, यदि हम जनसंख्या नियंत्रित कर देश को खुशहाल बना सकते हैं; संसाधन सम्पन्न बना सकते हैं, उच्च एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर महान व्यक्ति बना सकते हैं तो भीड़ जमा करने करने की क्या जरूरत है। अगर हम उन्हें उचित शैक्षणिक व स्वास्थ्य सुविधा नहीं प्रदान कर सकते है तो उन्हें मूर्ख व कमजोर बनाने का हमें क्या अधिकार है।

आखिर आप कह उठेंगे प्यार! कैसा प्यार–पैतृक प्यार! मातृत्व प्यार! यही ना! यदि यह सत्य है तो दुनिया के हर बच्चों से क्यों नहीं प्यार करते। आपका अनुभव बढ़ता जाएगा आपका ज्ञान बढ़ता जाएगा। प्रेम इनकार करने वाले सूत्र नहीं, बुद्धिमतापूर्ण स्वीकार करने वाले सूत्र है। जिसके जीवन में प्रेम का स्वर होता है, वह परमात्मा के उतने ही करीब होते हैं और उसके प्रेम की मंदाकिनी कभी धूमिल नहीं पड़ती।

*****

'अनुश्री' से – हिन्दी

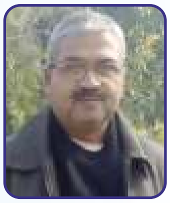

रमेश चन्द्र तिवारी
उच्च श्रेणी सहायक
भारतीय जीवन बीमा निगम
शाखा बहराइच

हिन्दी दुनिया की अन्य भाषाओं में सबसे अधिक समृद्ध, सुव्यवस्थित एवं सरल है। हिन्दी के अतिरिक्त कोई ऐसी भाषा नहीं है जिसका व्याकरण अपवादविहीन हो। सच्चे अर्थों में हिन्दी ही विश्व भाषा की अधिकारी है। इसकी लिपि देवनागरी है जो अत्यंत ही वैज्ञानिक है। दुनिया के अट्ठासी करोड़ लोग हिन्दी बोलते व समझते हैं। उसे संस्कृत से नवीन शब्द रचना और शव्द संपदा विरासत में प्राप्त है। अन्य भाषाओं के शब्दो सहित देशी बोलियों के अपार शब्द संग्रह उसे संप्रेषण की उच्चतम क्षमता प्रदान करते हैं। हिन्दी ने जिस तरह स्वतंत्रता संग्राम को उसके लक्ष्य तक पहुचाया था उसी तरह आज भी राष्ट्र–प्रेम की लौ को जलाए रखने के लिए वह एक मात्र शाधन है। 14 सितम्बर सन् 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। इसके बाद संविधान में राजभाषा के सम्बन्ध में धारा 343 से 352 तक की व्यवस्था की गयी है। प्रतिवर्ष 14 सितम्बर का दिन हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

कौन देश है जिसे बताओ निज भाषा से प्यार नहीं?
निज वाणी, जीवन पद्धति का किसको है अभिमान नहीं?

किस भाषा के बूते पर जापान उन्नती करता है?
रूस, फ्रांस विज्ञान शिखर पर किसके बल पर चढ़ता है?

है कोई अंग्रेज जिसे हो अँग्रेज़ी का ज्ञान नहीं?
हिन्दी लोग बहुत हैं जिनको हिन्दी की पहचान नहीं।

हमें शिकायत नहीं है लोगों अँग्रेज़ी क्यों सीख रहे,
हमें शिकायत तो इसकी है हिन्दी को क्यों भूल रहे।

हमें गर्व तो तब होगा जब चीनी से चीनी बोलो,
लेटिन, ग्रीक सहित दुनिया की सारी भाषाएँ सीखो।

दुख तो तब ही होता है जब हिन्दी नहीं समझते हो,
तुमने हिन्दी नहीं पढ़ी इसको ही गर्व मानते हो।

धर्म संस्कृति के दीपों को हिन्दी ने संजोया है,
पराधीनता की आँधी में उर में उनको ढोया है।

हिन्दी ने हुंकार भरी तो विदेशियों के पैर उठे,
भारत की भूमी से गोरे जाने को मजबूर हुए।

हिन्दुस्तानी का परिचय यदि हिन्दी नहीं तो फिर किससे?
भेदभाव से बचो हमेशा ही इसके मीठे विष से।

हर एक क्षेत्र में नये–नये नित तुम भी आविष्कार करो,
सब कुछ तुम भी कर सकते हो अपने पर विश्वास करो।

फिर अपनी हिन्दी को देखो उपयोगी वह कितनी है,
सब भाषाओं में उत्तम वह सरल और सक्षम भी है।

तुम महान यदि बनो तो हिन्दी खुद महान बन जाएगी,
अपने साथ तुम्हारा भी यश भू पर वह फैलाएगी।

तुम्हें नकल ही करना है तो हिन्दी साथ नहीं देगी,
जिसकी नकल करोगे केवल उसकी ही जै–जै होगी।

बड़े विचारों को सोचें हम उनको हिन्दी में लिखें,
औरों से तुलना करने को उनकी भाषाएँ सीखें।

व्यग्र भाव स्पर्धा का केवल इससे ही जन्मेगा,
सबके आगे होने का उन्माद तभी ही पकड़ेगा।

अपने पैरों पर अपने को खड़ा तभी कर पाएँगे
जब हिन्दी और हिन्द का झंडा दुनिया में फ़हराएँगे।

*****

दास्तां – हर जरूरतमन्द की

विशद रस्तोगी
स.श्रे. III (लेखा)
भारतीय खाद्य निगम मण्डल कार्यालय
फ़ैज़ाबाद

हर बूढ़े बेबस गरीब की, दास्तां अनोखी होती है,
दिल के दरमियान बातें उनके, हजारों भरी होती है।

पूछने पर कुछ उनसे, पहले वो थोड़ा झिझकते हैं,
फिर अपना समझकर हमें, हमसे सब कुछ कह देते हैं।

जब बैठते है उनके साथ हम, और ध्यान से सुनते है,
तो दिल में भरी तकलीफों के, अंबार दिखाई पड़ते हैं।

किसी को अपनों ने लूटा है, कोई करमों से टूटा है,
रह गए जो थोड़े बहुत, नसीब से खुद के वो रूठा है।

कहते है वो हमसे, उनके अपने उन्हें धोखा दे गए,
रुपया पैसा ना रहा, तो साथ ही छोड़ गए,

आवाज़ में उनकी, एक पीड़ा नज़र आती है,
दर्द के पन्नों के भीतर, उनकी आंखें भर आती हैं।

रह गए वो ज़िन्दगी भर अकेले, सड़कों पर भटकते,
इंसानियत के भरोसे, जिन्दगी काटने को तड़पते।

सुनकर तकलीफें उनकी, आंखें हमारी भी भर आती हैं,
पर मुस्कुरा दे वो ज़रा सा, तो खुशी दिल को छू जाती है।

एक आसरा, कुछ कपड़े, दो वक़्त की रोटी ही उन्हें चाहिए,
कष्ट से नहीं डरते वो, उन्हें बस आपका साथ चाहिए।

दो बातें करके देखिए, उनसे रिश्ता निभाकर देखिए,
अपनों से ज्यादा अपनेपन का प्यार पाकर देखिए।

श्री मृगेंद्र राज : साक्षात्कार

नराकास, अयोध्या के तत्वावधान में 15वी अर्द्ध–वार्षिक बैठक के दौरान 'तुलसी भाषा सम्मान योजना' का शुभारंभ आदरणीय अध्यक्ष महोदय श्री अनिल कुमार झा एवं मुख्य अतिथि आदरणीय प्रॉक्टर महोदय श्री अजय कुमार सिंह के कर–कमलों से किया गया। श्री मृगेंद्र राज जी को 'तुलसी भाषा सम्मान योजना' के तहत रूपये 21,000/– के चेक एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

आपने पाँच वर्ष की आयु में लेखन आरंभ किया और जल्द ही पुस्तक भी लिखने लग गए। आपके द्वारा भारत की –51– नदियों पर पुस्तक लिखी गई जो विश्व रिकॉर्ड में दर्ज हुई है। आपने रामायण के पात्रों पर –51– पुस्तकें, महिला क्रांतिकारियों पर –45– पुस्तकें, काव्य–संग्रह, उपन्यास और –110– से अधिक जीवनी लिख कर विश्व–रिकॉर्ड बनाया है। कुल –8– विश्व रिकॉर्ड दर्ज होने के अलावा –100– से अधिक एवार्ड प्राप्त कर चुके हैं। काव्य रचना में विविध विषयों पर लिखने के साथ–साथ अनेक विधाओं पर भी गहन जानकारी है। हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने के लिये आपको नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या द्वारा 26 अगस्त, 2022 को तुलसी भाषा सम्मान से भी अलंकृत किया गया है।

मृगेंद्र जी, कुछ अपने बारे में बतायें।

नमस्कार! मेरा नाम मृगेंद्र राज पांडेय है एवं मेरी आयु 16 वर्ष है। मैं जिला अयोध्या में रहता हूं एवं दसवीं की परीक्षा देने वाला हूं। मेरे नाम से कुल –8– विश्व रिकॉर्ड दर्ज हैं।

आपके जीवन में लेखनी का आरंभ कब और कैसे हुआ?

मैंने पाँच वर्ष की आयु में कविताएं लिखना आरंभ किया। तत्पश्चात पुस्तकें भी लिखनी आरंभ की। मेरा पहला विश्व रिकॉर्ड छह वर्ष की आयु में दर्ज हुआ जब मेरी पहली पुस्तक 'उद्भव' जोकि एक काव्य–संग्रह है, प्रकाशित हुई। तब से मेरी लेखनी निरंतर चल रही है।

आप किस भाषा में लिखते हैं?

मैं हिंदी भाषा में लिखता हूं चूकि मेरा इस भाषा से व्यक्तिगत लगाव है।

आपकी पहली कविता किस बारे में थी?

मुझे सामाजिक मुद्दों पर लिखना पसंद है। इसके अलावा, कुछ ऐसे आंदोलन जो हमें जीवन में बराबरी के साथ जीना सिखाते हैं। मेरा दूसरा विश्व रिकॉर्ड 'यंगेस्ट मल्टी–डाइमेंशनल राइटर ऑफ द वर्ल्ड' (विश्व का सबसे कम उम्र का बहु–आयामी लेखक) के रूप में दर्ज हुआ था जो मुझे नौ विभिन्न विषयों पर लिखने हेतु प्राप्त हुआ था।

आपको लिखना किसने सिखाया?

जैसा कि मैंने आपको बताया, मैं बहुत ही छोटी उम्र से लिख रहा हूं। मैं कहूंगा कि परिस्थितियां ही मेरी गुरू हैं जिसने मुझे लिखने के लिये प्रेरित किया।

क्या आप किसी उपनाम से लिखते हैं?

जी नहीं, मेरी पुस्तकों पर रचनाकार का नाम आपको मृगेंद्र राज पांडेय ही मिलेगा परंतु लोग मुझे 'आज का

अभिमन्यु' नाम से भी बुलाते हैं। यह नाम मुझे मीडिया रिपोर्टर्स से मिला है।

आपने रामायण और महाभारत कब पढ़ी?

जब मैंने रामायण के 51 पात्रों पर लिखने का विचार बनाया तब मैंने उनके बारे में जानकारी इकठ्ठा करना शुरू की। तभी मैंने रामायण भी पढ़ना आरंभ किया। तब मेरी आयु लगभग 9–10 वर्ष थी।

रामायण का कौन सा पात्र आपके लिये सबसे प्रेरणादायी है?

मेरे लिये सबसे प्रेरणादायी पात्र प्रभु श्रीराम ही हैं। यदि हम प्रभु श्रीराम के जीवन का 1% भी अपने जीवन में लागू कर सके तो 'राम–राज' की परिकल्पना साकार होने में समय नहीं लगेगा।

आपने महिला क्रांतिकारियों के बारे में भी लिखा है। यह कैसे शुरू हुआ?

आज के युग में हरेक व्यक्ति महिला सशक्तिकरण के बारे में चर्चा करता है पर योगदान देने के समय सभी पीछे हट जाते हैं। इसलिये मैंने महिला क्रांतिकारियों के बारे में लिखना शुरू किया। इस दिशा में मैंने अपनी लेखनी रानी लक्ष्मीबाई से आरंभ की जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

भविष्य में आप स्वयं को कहाँ देखते हैं?

मैं अपनी लेखनी जारी रखना चाहता हूं। इसके साथ ही, मैं भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाना चाहता हूं जिसके माध्यम से मैं समाज में कुछ सकारात्मक परिवर्तन ला सकू।

जैसा कि हम जानते हैं कि आप इस वर्ष दसवीं की परीक्षा दे रहे हैं, जिसके लिये आपको हार्दिक शुभकामनाएं! पढ़ाई के साथ–साथ लेखनी का कार्य कैसे करते हैं?

आपके शुभकामनाओं हेतु धन्यवाद! जब मैं किसी विषय पर लिखना आरंभ करता हूं तब मैं सभी अन्य कार्य एक तरफ रखकर भूल जाता हूं और मेरा पूरा ध्यान उस विषय पर रहता है जिस पर मुझे लिखना है। मैं रात में लिखना पसंद करता हूं क्योंकि रात में बहुत शांति रहती है।

आपने माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी जी के बारे में भी लिखा है। यह प्रेरणा कहाँ से मिली?

मैंने कई प्रमुख हस्तियों की जीवनी लिखी है। चूकि हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा प्रदेश के लिये किये गये कार्य काफी प्रेरणादायक है, अत: मैंने इनकी जीवनी लिखनी शुरू की।

पाठकवर्ग के लिये आपका संदेश

मैं सिर्फ इतना ही कहूंगा कि अपनी अभिरुचि का अनुसरण करें। इसके साथ, अपनी संस्कृति व सभ्यता से जुड़ाव बहुत जरूरी है। इसे कभी न भूलें।

*****

राजभाषा शील्ड 2021–22 : नराकास, फ़ैज़ाबाद

केंद्र सरकार के कार्यालय/विद्यालय वर्ग

1	केंद्रीय विद्यालय, फ़ैज़ाबाद कैंट, अयोध्या	प्रथम
2	केंद्रीय रिज़र्व पुलिस बल कार्यालय कमाण्डेंट 63 बटालियन, अयोध्या	द्वितीय
3	आकाशवाणी, फ़ैज़ाबाद, अयोध्या	तृतीय

बैंक/बीमा कंपनी (कार्यालय वर्ग)

1	सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या	प्रथम
2	पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय, अयोध्या	द्वितीय
3	यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या	तृतीय

बैंक/बीमा कंपनी (शाखा वर्ग)

1	केनरा बैंक, मुख्य शाखा, अयोध्या	प्रथम
2	आईडीबीआई बैंक लिमि., मुख्य शाखा, अयोध्या	द्वितीय
3	नेशनल इंश्योरेंश कम्पनी लिमि., शाखा कार्यालय, अयोध्या	तृतीय

विशेष प्रोत्साहन

1	भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, अयोध्या
2	भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, अयोध्या
3	राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय, अयोध्या
4	जवाहर नवोदय विद्यालय, अयोध्या
5	दि न्यू इंडिया एश्योरेंश कं लिमि., मंडल कार्यालय, अयोध्या

दिनांक 12 दिसम्बर, 2022 को माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से नराकास, फैज़ाबाद द्वारा 'राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम' का आयोजन.

दिनांक 23 दिसम्बर, 2022 को माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से भारतीय खाद्य निगम, मण्डल कार्यालय, अयोध्या द्वारा ''ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला'' का आयोजन.

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, कमाण्डेंट कार्यालय, 63 बटालियन, अयोध्या द्वारा 'सोशल मीडिया युवा पीढ़ी की पाठशाला है' विषय पर ''हिंदी वाद–विवाद प्रतियोगिता'' का आयोजन.

नराकास, फैज़ाबाद के तत्वावधान में सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया द्वारा 'गीत गायन प्रतियोगिता' का आयोजन

नराकास, फ़ैज़ाबाद के तत्वावधान में जवाहर नवोदय विद्यालय द्वारा दिनांक 22.07.2022 को 'आशुभाषण प्रतियोगिता' का आयोजन

नराकास, फ़ैज़ाबाद के तत्वावधान में केन्द्रीय विद्यालय द्वारा दिनांक 25.07.2022 को 'काव्य-पाठ' प्रतियोगिता का आयोजन

नराकास, फ़ैज़ाबाद के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों हेतु माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से 'राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम' का आयोजन

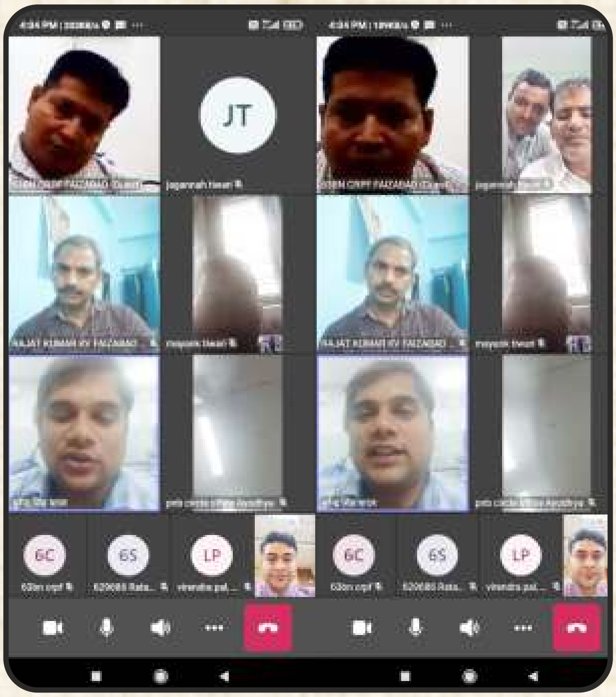

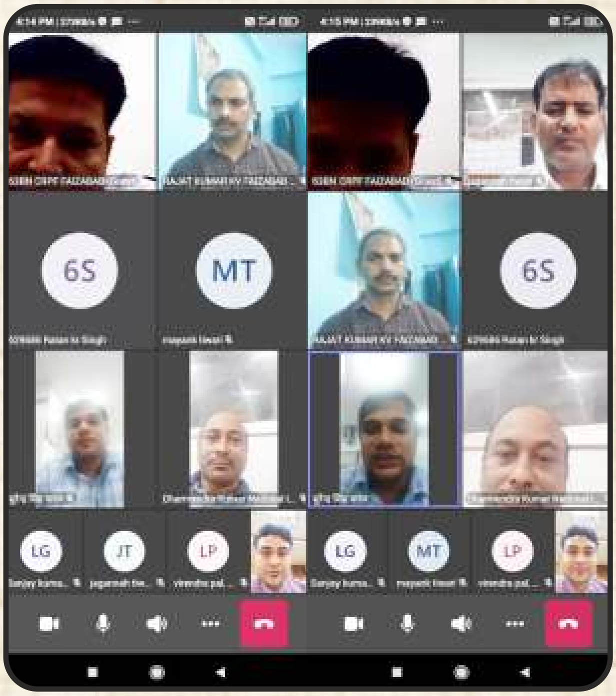

15वीं अर्द्ध–वार्षिक समीक्षा बैठक

श्री अनिल कुमार झा, अध्यक्ष, नराकास, फ़ैज़ाबाद की अध्यक्षता में इस बैठक का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ. उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय 2. गृह मंत्रालय, भारत सरकार से सहायक निदेशक श्री निर्मल कुमार दुबे जी ऑनलाइन माध्यम से बैठक में जुड़े एवं मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलानुशासक (प्रॉक्टर) डॉ. अजय प्रताप सिंह कार्यक्रम में उपस्थित थे. बैंक ऑफ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा से सहायक महाप्रबंधक– राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री पुनीत कुमार मिश्रा जी, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया से क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुरेश कुमार सिंह एवं यूनियन बैंक ऑफ इंडिया से क्षेत्रीय प्रमुख श्री हिमांशु श्रीवास्तव, विशेष अतिथि के रूप में डॉ. सुरेंद्र मिश्रा, समन्वयक– हिंदी भाषा एवं प्रयोजनमूलक विभाग, समन्वयक– अवधी एवं भोजपुरी भाषा डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या कार्यक्रम में उपस्थित रहे. कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय, आकाशवाणी एवं केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल को मंचासीन दवारा 'राजभाषा शील्ड' प्रदान करते हुए छायांकन।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद

अयोध्या में अयोध्या

गिरिश पांडेय
मुख्य प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, अम्बेडकरनगर
बैंक ऑफ़ बड़ौदा

भगवान श्री राम की जन्मभूमि से पहचानी जाने वाली जो अयोध्या पहले फैजाबाद ज़िला अन्तर्गत मुख्यालय से लगभग 8 कि.मि. दूर सरयू नदी के पश्चिमी तट पर स्थित एक छोटी सी धार्मिक महत्व की नगरी थी, 6 नवम्बर 2018 के पश्चात् अपना विस्तार पूरे फ़ैजाबाद जनपद में करते हुए भव्य एवं नव्य रूप में सज–सँवर रही है। विदित है कि उत्तर प्रदेश सरकार की एक राजाज्ञा द्वारा दि. 6 नवम्बर 2018 से फ़ैजाबाद का नाम अयोध्या हो चुका है तथा उसके अंतर्गत जो अयोध्या थी वह अयोध्या धाम।

अयोध्या और फ़ैजाबाद का अपना अलग–अलग इतिहास है। जहाँ अयोध्या एक पौराणिक एवं धार्मिक नगरी के रूप में प्रतिस्थापित है, वहीं फ़ैजाबाद में नवाबी संस्कृति के कई प्रतीक मौजूद हैं। आइये यहाँ हम अयोध्या से अयोध्या धाम एवं फ़ैजाबाद से अयोध्या की यात्रा पर दृष्टिपात करते हैं।

अयोध्या से अयोध्या धाम–

अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका
पुरीद्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका:

स्कंद पुराण के अनुसार जैसे काशी भगवान शिव के त्रिशूल पर स्थित है, वैसे ही अयोध्या भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र पर अवस्थापित है, अतः यह मोक्षदायिनी सप्तपुरियों में से एक है। 6673 ई.पू. सूर्यपुत्र वैवस्वत मनु ने इस नगर की स्थापना की थी तथा वे इसके प्रथम राजा हुए। रामायण के अनुसार मनु के 10 पुत्रों में इच्छवाकु के कुल में त्रेता युग में महाराज दशरथ के पुत्र के रूप में विष्णु अवतार श्री राम ने इसी अयोध्या नगरी में जन्म लिया। आदि पुराण के अनुसार अयोध्या कोसल राज्य की राजधानी थी, जिसे साकेत के नाम से भी जाना जाता था। कहा जाता है कि चौथी शताब्दी में जब गुप्त राजाओं ने इसे अपनी राजधानी बनाई तो इसका नाम साकेत से बदल कर अयोध्या कर दिया। पहले श्रावस्ती से दक्षिण की तरफ चलने पर साकेत या अयोध्या ही घनी आबादी का व्यापारिक दृष्टि से समृद्ध नगर था।

इसलिए गौतम बुद्ध एवं महावीर स्वामी भी अपने मत के प्रचार–प्रसार के लिए अयोध्या आये और बहुत दिनों तक रहे। अशोक ने यहाँ कई बौद्ध बिहार बनवाए। बौद्ध एवं जैन धर्म के अनुयायियों का भी यह तिर्थस्थल है। यह जैन मत के चार तिर्थांकरों की जन्मभूमि भी है। अयोध्या कई बार बसी एवं उजड़ी कहा जाता है कि वर्तमान अयोध्या को राजा विक्रमादित्य ने उज्जैन से आकर बसाया। उन्होंने ही रामगढ़ किला एवं कई मंदिरों, महलों का निर्माण कराया। 11 वीं शदी में गहड़वाल राजाओं ने भी राम जन्मभूमि सहित अनेक स्थान पर वैष्णव मंदिरों का निर्माण कराया, जो मुगल काल में विध्वंस कर दिये गये। 1226 ई. में अयोध्या दिल्ली सल्तनत के अधीन अवध प्रान्त की राजधानी बनी। औरंगजेब की मृत्यु के बाद अवध दिल्ली सल्तनत से स्वतंत्र हो गया और नबाबों ने शासन किया। 1856 ई. में तमाम विरोध के बावजूद अवध प्रान्त ब्रिटिश हुकूमत के अधीन हो गया और इसे संयुक्त प्रान्त आगरा और अवध के नाम से जाना गया।

फ़ैजाबाद से अयोध्या–

इतिहास में दर्ज है कि फ़ैजाबाद की स्थापना अवध के

दूसरे नवाब सआदत अली ख़ान ने 1730 ई. में की और इसे अवध की राजधानी बनाई। लेकिन कुछ विद्वानों का मत है कि साकेत और अयोध्या एक न होकर अगल–बगल बसे दो अलग नगर थे, और तत्कालीन मुस्लिम शासकों ने साकेत का नाम फ़ैजाबाद कर दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद फ़ैजाबाद जनपद का जो प्रशासनिक स्वरूप सामने आया उसके अंतर्गत राम की नगरी अयोध्या को एक धार्मिक शहर के रूप में मान्यता मिली। इतिहास को दुरुस्त करते हुए वर्तमान उत्तर प्रदेश सरकार ने पुनः 6 नवम्बर 2018 को फ़ैजाबाद का प्रशासनिक नाम बदल कर अयोध्या कर दिया। हिन्दुओं के लम्बे संघर्ष एवं सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप से अयोध्या में भगवान राम के जन्मस्थान को पुनः मान्यता मिली और 5 अगस्त 2020 को उस स्थान पर भव्य राम मंदिर निर्माण की नींव पड़ी। आदि काल से आज तक अयोध्या कितनी बार बसी और मिटी यह तो पता नहीं किन्तु उसके सुख–दुख की साक्षी सरयू नदी ने सदैव अयोध्या को अपने आँचल की छाँव में महफ़ूज़ रखा। आज अयोध्या सँकरी गलियों से निकलकर पुनः राजपथ की ओर अग्रसर है। दीपावली के अवसर पर सरयूतट पर होने वाला दीपोत्सव गीनिज बुक में वर्ष प्रतिवर्ष रिकार्ड दर्ज कर रहा है।

आइये बदलती अयोध्या के हम साक्षी बनें।

*****

कविता

तलाश

अश्वनी दूबे
स.श्रे. II (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम
मंडल कार्यालय, अयोध्या

जो नहीं दिखाया जा रहा उसे देख सके
हर आंखों में वो नज़र ढूंढता हूं।
बहुत छोटी सी है दुनिया मेरी
मैं अखबार में अपना शहर ढूंढता हूं।

यहाँ हर कोई उदास है आजकल
इसीलिए राहत भरी ख़बर ढूंढता हूं।
ख़ुदा देर से सुनता है मेरी फरियादें
मैं तुम्हारी दुआओं में असर ढूंढता हूँ।

सब अकेले भाग रहे हैं दुनियां में
संभलकर चल सकूं ऐसी डगर ढूंढता हूं।

जो मेरे साथ थोड़ा ठहर सके
एक ऐसा हमसफर ढूंढता हूँ।

दिन भर की थकावट खूंटियों पर टांग दूं
इस जमाने में ऐसा घर ढूंढता हूं।
जो वक्त सबपर मेहरबान हो
दीवार पर ऐसी गज़र ढूंढता हूं।

जो दर्द बांट सके गैरों का भी
मैं हर शख्स में वो हुनर ढूंढता हूं।
मेरा ज़मीर है बहुत प्यारा मुझे
इसीलिए खुद को हर पहर ढूंढता हूं।

नकद–रहित अर्थव्यवस्था

आर्थिक व्यवस्था का वह स्वरूप जिसमें धन का अधिकांश लेनदेन चेक, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, नेट बैंकिग, मोबाइल पेमेंट तथा अन्य डिजिटल माध्यमों से किया जाता है, **कैश–लेस अर्थव्यवस्था** कहलाती है। इस व्यवस्था में नकदी (कागज़ी नोट या सिक्के) का चलन कम हो जाता है।

नकद–रहित अर्थव्यवस्था वह है जिसमें सभी लेनदेन कार्ड या डिजिटल माध्यमों से हों। कागज़ी मुद्रा का परिचालन न्यूनतम होगा।

भारत लेनदेन हेतु बहुत अधिक नकद प्रयुक्त करता है। परिचालन में मुद्रा नोटों की संख्या अन्य बड़े देशों से कही अधिक है। मास्टर कार्ड रिपोर्ट के अनुसार विश्व में सबसे अधिक नकद का उपयोग भारत में होता है।

नकद रहित अर्थव्यवस्था, 'नकद रहित भारत' या 'कैशलेस भारत' एक मिशन है, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने शुरू किया है। इस मिशन का उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था की नकदी पर निर्भरता को कम करना है ताकि देश में बड़ी मात्रा में छुपे काले धन को बैंकिंग प्रणाली में वापिस लाया जाए। इस मिशन की शुरूआत 8 नवंबर, 2016 को हुई जब सरकार ने एक क्रांतिकारी पहल करते हुए 500 रुपये एवं 1000 रुपये के पुराने नोटों का अचानक अवमूल्यन कर दिया।

नीति आयोग ने हाल ही में कहा कि आने वाले 3–4 वर्षों में डेबिट, क्रेडिट कार्ड्स और एटीएम आदि का झंझट खत्म हो जाएगा और ऑनलाइन पेमेंट और रिसीप्ट में उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिलेगी । विदित हो कि विमुद्रीकरण के बाद से ही कैशलेस यानी नकद–रहित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिये सरकार प्रतिबद्ध नज़र आ रही है। यह आवश्यक भी है क्योंकि भारत में सबसे ज़्यादा नकदी संचालन में है, 2014 में यह जीडीपी की 12.42% थी, जबकि चीन और ब्राज़ील के लिये ये आँकड़े क्रमशः 9.47% तथा 4% थे। नकद संचालन में भारतीय रिज़र्व बैंक और वाणिज्यिक बैंकों का सालाना खर्च 21,000 करोड़ रुपए आता है।

क्यों है नकद–रहित अर्थव्यवस्था

उच्च प्रमात्रा में नकद उपयोग केवल अनौपचारिक अर्थव्यवस्था को सशक्त करेगा, जो कि राष्ट्र हित में नहीं है।

अतः निम्न नकद उपयोग से अनौपचारिक अर्थव्यवस्था व काले धन में भी कमी आयेगी एवं परिणामस्वरूप सरकारी कर वसूली में संवृद्धि होगी।

नकद–रहित अर्थव्यवस्था में लेन–देन के प्रकार :

मोबाइल वॉलेट–

- मोबाइल वॉलेट स्मार्टफोन में मौजूद एक वर्चुअल वॉलेट (आभासी वॉलेट) है, जिसमें पैसे डिजिटल मनी के रूप में रखे जाते हैं।
- दूसरे शब्दों में कहें तो यह एक डिजिटल पर्स है जिसमें से पैसे को निकालकर लेन–देन और भुगतान किया जा सकता है।

प्लास्टिक मनी–

- प्लास्टिक मनी का तात्पर्य प्लास्टिक से बने उन कार्ड्स जैसे डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, एटीएम कार्ड आदि से है जिनका इस्तेमाल भुगतान आदि के लिये किया जा सकता है।
- प्लास्टिक मनी के प्रयोग से कैशलेस अर्थव्यवस्था को बल तो मिलता ही है साथ में नकदी लेकर चलने की झंझटों से भी मुक्ति मिल जाती है।

नेट बैंकिंग–

- किसी भी बैंक द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं का कंप्यूटर, मोबाइल या किसी अन्य यंत्र के माध्यम से इंटरनेट के ज़रिये प्रयोग करना नेट बैंकिंग कहलाता है।
- इसके लिये बैंक वेबसाइट और मोबाइल एप बनाकर उसे अपने ग्राहकों को इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध करवाते हैं।
- तत्काल भुगतान सेवा, राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक फंड्स ट्रांसफर और रीयल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट नेट बैंकिंग के तहत आने वाली भुगतान प्रणालियाँ हैं।

यूनिफाइड पेमेंट इंटरफ़ेस–

- एकीकृत भुगतान इंटरफेस, राष्ट्रीय भुगतान निगम (National Payment Corporation of India) द्वारा आरंभ की गई लेन–देन की एक नई प्रणाली है जो वर्चुअल पेमेंट एड्रेस का उपयोग कर धन का त्वरित हस्तांतरण सुनिश्चित करती है।
- यह भुगतान का एक ऐसा माध्यम है जो सातों दिन चौबीसों घंटे कार्य करता है। इस सेवा का लाभ बिना किसी इंटरनेट कनेक्टिविटी के भी उठाया जा सकता है।
- इससे धन के लेन–देन में नकदी का चलन कम हो जाएगा तथा व्यापारिक भुगतान सरल सुरक्षित एवं पारदर्शी हो जाएगा।

पेमेंट बैंक–

- भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा दो प्रकार के लाइसेंस जारी किये जाते हैं– सार्वभौमिक बैंक लाइसेंस और विभेदित बैंक लाइसेंस।
- एक पेमेंट बैंक, विभेदित बैंक लाइसेंस प्राप्त बैंकों की श्रेणी में आता है। पेमेंट बैंक एक विशेष प्रकार के बैंक हैं, जिन्हें कुछ सीमित बैंकिंग क्रियाकलापों की अनुमति है।

- इन बैंकों का उद्देश्य प्रवासी श्रमिक वर्ग, निम्न आय अर्जित करने वाले परिवारों, लघु कारोबारों, असंगठित क्षेत्र की अन्य संस्थाओं को सेवा प्रदान कर अर्थव्यवस्था के डिजिटलीकरण और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना है।

नकद–रहित अर्थव्यवस्था के लाभ :

टैक्स चोरी पर रोक–

- यदि अर्थव्यवस्था कैशलेस होती है तो टैक्स चोरी की घटनाओं में उल्लेखनीय रूप से कमी आएगी।
- ऐसा इसलिये क्योंकि प्रत्येक कैशलेस लेन–देन के प्रमाण डेटाबेस में अंकित हो जाते हैं, जिससे किसी भी व्यक्ति की वास्तविक आय से संबंधित आँकड़े जुटाने में आसानी होती है।

काले धन पर रोक–

- कैशलेस समाज का एक मुख्य लाभ यह है कि इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के ज़रिये किये गए आर्थिक लेन–देन ब्लैक मनी के बाज़ार को खत्म कर सकता है।
- नकदी आधारित अर्थव्यवस्था में ब्लैक मनी इकट्ठा करना, नशीली दवाओं की तस्करी, मानव तस्करी, आतंकवाद, जबरन वसूली आदि जैसे आपराधिक गतिविधियों को अंजाम देना आसान बन जाता है। कैशलेस अर्थव्यवस्था इन से मुक्ति दिलाने में सहायक सिद्ध होगी।

बैंकिंग सेवाओं तक व्यापक पहुँच–

- यह प्रयास सभी को बैंकिंग सेवाओं की सार्वभौमिक उपलब्धता सुनिश्चित करने में अत्यंत ही सहायक होगा।
- ऐसा इसलिये क्योंकि इस व्यवस्था में बैंकिंग सेवाओं के विस्तार हेतु बुनियादी ढाँचा खड़ा करने के बजाय बस एक डिजिटल स्ट्रक्चर की ज़रूरत होगी।

लागत में कमी–

- बैंकिंग सेवा प्रदान करने हेतु किसी स्थान विशेष पर पहुँचने की शर्त खत्म हो जाएगी, इससे ट्रांजेक्शनल (लेन–देन संबंधी) मूल्य के साथ–साथ ट्रांसपोर्ट खर्च में भी कमी आएगी।
- कैशलेस लेन–देन बढ़ेगा तो रिज़र्व बैंक को कम नोट छापने होंगे जिससे नोटों की छपाई पर आने वाली भारी लागत को कम किया जा सकता है।
- साथ ही एटीएम को सुचारू रूप से चालू रखने में बैंकों का होने वाला खर्च भी कम होगा।

जनहितकारी योजनाओं की दक्षता में वृद्धि–

- जनता के कल्याण हेतु चलाए जा रहे कई कार्यक्रमों की दक्षता बढ़ेगी, क्योंकि पैसे बिचौलियों के हाथ में जाने के बजाय इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से सीधे लोगों के बैंक अकाउंट में पहुँचेगा।

नकद–रहित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताएं

1. नेटवर्क कनेक्टिविटी
2. विद्युत
3. स्मार्टफोन
4. अपेक्षित बैंक खाता
5. डेबिट व क्रेडिट कार्ड
6. तृतीय पक्ष आवेदन (पेटीएम, आदि)

नकद–रहित अर्थव्यवस्था में चुनौतियां :

1. त्वरित उपयोग के लिये हाथ में कोई मुद्रा / नकद नहीं
2. कार्ड चोरी का भय
3. नकद आपके नियंत्रण के अधीन है, मशीन नहीं
4. वस्तु व सेवा पर अधिभार (सर्चार्ज)

5. कार्ड की आवधिकता समाप्त होने के पश्चात नए कार्ड हेतु प्रतीक्षा
6. प्रणाली हैक का खतरा
7. प्रौद्योगिकी की सीमाएं और उस पर निर्भरता
8. अशिक्षित आबादी कैसे होगी नकद–रहित
9. सुविधाओं और आधारभूत संरचना की कमी
10. ताकतवर बैंकों व वित्तीय संस्थानों की मनमानी का डर
11. हद से अधिक निगरनी के खतरे बढ़ेंगे
12. साइबर क्राइम और जालसाजी के खतरे

अधिकांश जनसंख्या 'बैंकिंग नेट' के बाहर–

- वर्ष 2015–2016 की आर्थिक समीक्षा के अनुसार बचत कार्यों के संबंध में पुरे देश में बैंकिंग गतिविधियों तक मात्र 46 प्रतिशत लोगों की पहुँच है।
- जन–धन योजना लागू होने के पश्चात् बड़ी संख्या में बैंक अकाउंट तो खुल गए लेकिन अधिकांश खातों से कोई लेन–देन नहीं हो रहा।
- कैशलेस अर्थव्यवस्था के निर्माण हेतु यह आवश्यक है कि इन खातों को क्रियाशील बनाए जाए अर्थात् इनसे कुछ लेन–देन हो।

असंगठित क्षेत्र का प्रभाव–

- यदि जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा बैंकिंग नेट के दायरे में आ भी जाए तो कैशलेस होने की मुहिम शायद ही सफल हो, क्योंकि देश की एक बड़ी आबादी असंगठित क्षेत्र में कार्य करने को अभिशप्त है।
- यहाँ होने वाला अधिकांश लेन–देन नकदी में ही किया जाता है। ऐसे में किसी से यह उम्मीद करना कि वह नकदी में प्राप्त वेतन को अपने बैंक अकाउंट में जमा कर फिर कार्ड या मोबाइल वॉलेट का प्रयोग करेगा तो यह बेईमानी होगी।

साइबर सुरक्षा का मुद्दा–

- विदित हो कि अक्टूबर 2016 में 30 लाख से अधिक डेबिट कार्डों का विवरण चोरी हो गया था और यह हमारी कमज़ोर साइबर सुरक्षा का एक उदाहरण है।
- आज देशों के बीच साइबर युद्ध चल रहा है और भारत में साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करने के बुनियादी सुविधाओं तक का अभाव है।
- ऐसे में यदि भारत की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था कैशलेस हो जाती है तो हमें अपनी साइबर सुरक्षा को भी मज़बूत बनाना होगा।

नेटवर्क कनेक्टिविटी और इंटरनेट की लागत–

- ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्शन की अनुपलब्धता या विफलता भारत में आम बात है। इसके अलावा भारत में इंटरनेट की लागत अब भी काफी अधिक है।
- कार्ड पर शुल्क, ऑनलाइन लेन–देन वे अतिरिक्त शुल्क है जो विक्रेताओं द्वारा लगाए जाते हैं। डेबिट कार्ड पर मर्चेंट डिस्काउंट रेट (एमडीआर) भारत में बहुत अधिक है।
- लोगों में कंप्यूटर साक्षरता अभी भी कम है। इसके अलावा लोग लेन–देन के लिये इलेक्ट्रॉनिक पद्धति का उपयोग करने के लिये आशंकित हैं।

भारत में नकद–रहित अर्थव्यवस्था के लिये उपाय

1. जारी आंकड़ों के मुताबिक देश में इंटरनेट घनत्व 48.4 है। मतलब प्रति 100 लोगों पर इंटरनेट सब्स्क्राइबर की संख्या। देश की 66% जनसंख्या गांवों में रहती है लेकिन इंटरनेट की पहुंच सिर्फ 25.3% लोगों के पास है। वहीं शहरों में यह आंकड़ा 97.9% है। सर्वप्रथम हमें अपने देश में इंटरनेट एक्सेस नि:शुल्क करते हुए देश के प्रत्येक

कोने में इसे उपलब्ध कराना होगा

2. कंप्यूटर/मोबाइल साक्षरता : सभी को कंप्यूटर के उपयोग के बारे में साक्षर और जागरूक बनाना होगा

3. 392.2 मिलियन ग्राहक अभी भी 2जी नेटवर्क का प्रयोग कर रहे हैं जिसके कारण 10 में से 6 लेनदेन निम्न नेट गति के कारण असफल हो जाते हैं

4. केवल 90 मिलियन लोगों के पास 4जी और एलटीई सक्षम है

5. डिजिटल भुगतान महंगे होते हैं चाहे वह ग्राहक के लिये हो या विक्रेता के लिये

6. भाषा अनुकूलता : भारत में अशिक्षित आबादी के लिये प्रौद्योगिकी के साथ–साथ अंग्रेजी का प्रयोग कठिन है

भारत में नकद–रहित अर्थव्यवस्था के लिये 3 महत्वपूर्ण उपाय :

1. **ग्राहक शिकायत निवारण प्रणाली** : जब तक हम अपनी ग्राहक सेवा को त्वरित व सुलभ के साथ–साथ सुरक्षित नहीं बनायेंगे तब तक नकद–रहित अर्थव्यवस्था में परेशानी आती रहेगी। नकद–रहित अर्थव्यवस्था में असफल संव्यवहारों के लिये त्वरित निपटान होना चाहिये।

2. **डेटा सेंटर** : डेटा सेंटर द्वारा गोपनीयता का अनुरक्षण बहुत ही महत्वपूर्ण है

3. **साइबर फ्रॉड** : देश में साइबर सिक्युरिटी को सशक्त करने की आवश्यकता है। ऐसे हालत में लोगों के खाते से पैसे चोरी होने का खतरा बना रहेगा। हालांकि भारत सरकार दूसरे देशों के साथ मिलकर इस पर काम कर रही है।

रतन पी. वाटल समिति की सिफारिशें :

- नकद रहित अर्थव्यवस्था में बाधाओं से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर विचार करने के लिये रतन पी. वाटल की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई थी। इसके कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं
- एक अलग, स्वतंत्र भुगतान नियामक की स्थापना।
- उपभोक्ता संरक्षण, डेटा सुरक्षा और गोपनीयता पर प्रावधानों को शामिल करने के लिये भुगतान और निपटान अधिनियम पर पुनर्विचार।
- आरटीजीएस और एनईएफटी 24x7 आधार पर काम करना चाहिये।
- डिजिटल लेन–देन को बढ़ावा देने के लिये एक फंड बनाया जाना चाहिये।
- सभी सरकारी भुगतानों और लेन–देन को डिजिटल रूप में किया जाना चाहिये।
- शुल्कों में छूट दी जानी चाहिये, जैसे रेलवे टिकट बुकिंग पर सेवा शुल्क में छूट।
- सुझावों का समुचित क्रियान्वयन किया जाना चाहिये, हालाँकि इनमें से कुछ सुझावों पर सरकार काम कर रही है।

विमुद्रीकरण के बाद से लोगों ने आखिरकार क्रेडिट कार्ड / डेबिट कार्ड, और इलेक्ट्रॉनिक भुगतान के अन्य चैनलों के रूप में प्लास्टिक मुद्रा में विश्वास करना शुरू कर दिया है। पर्याप्त नकदी की अनुपलब्धता के कारण ऑनलाइन बैंकिंग बाजार को प्रमुखता मिली है। इसके अलावा, भुगतान करने के लिए ई–कॉमर्स माध्यम भी लोकप्रिय हुआ है और यहां तक कि अधिकांश लोग तो अब 50 रूपए का भुगतान भी डिजिटल माध्यमों की सहायता से कर रहे हैं। इन सभी घटनाओं को अर्थव्यवस्था के बेहतर विकास के लिए अच्छा माना जा रहा है।

*****

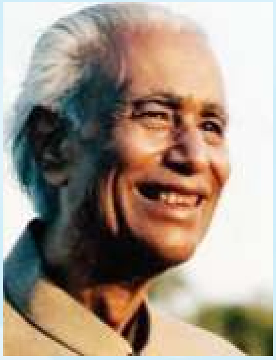

धर्मवीर भारती

डॉ. धर्मवीर भारती आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि, नाटककार और सामाजिक विचारक थे। वे साप्ताहिक पत्रिका 'धर्मयुग' के प्रधान संपादक भी रहे। डॉ. धर्मवीर भारती को 1972 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उनका उपन्यास 'गुनाहों का देवता' हिन्दी साहित्य के इतिहास में सदाबहार माना जाता है।

सूरज का सातवां घोड़ा को कहानी कहने का अनुपम प्रयोग माना जाता है, जिस पर श्याम बेनेगल ने इसी नाम की फिल्म बनायी, अंधा युग उनका प्रसिद्ध नाटक है।। इब्राहीम अलकाजी, राम गोपाल बजाज, अरविन्द गौड़, रतन थियम, एम के रैना, मोहन महर्षि और कई अन्य भारतीय रंगमंच निर्देशकों ने इसका मंचन किया है।

जीवन परिचय :

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर 1926 को इलाहाबाद के अतर सुइया मुहल्ले में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री चिरंजीव लाल वर्मा और माँ का श्रीमती चंदादेवी था। स्कूली शिक्षा डी.ए.वी. हाई स्कूल में हुई और उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पूर्ण की। प्रथम श्रेणी में एम.ए. करने के बाद डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में सिद्ध साहित्य पर शोध–प्रबंध लिखकर उन्होंने पी.एच.डी. प्राप्त की। भारती के पूर्वज पश्चिमी उत्तर प्रदेश में शाहजहाँपुर ज़िले के ख़ुदागंज नामक क़स्बे के ज़मीदार थे। पेड़, पौधों, फूलों और जानवरों तथा पक्षियों से प्रेम बचपन से लेकर जीवन पर्यन्त रहा। संस्कार देते हुए बड़े लाड़ प्यार से माता पिता अपने दोनों बच्चों धर्मवीर और उनकी छोटी बहन वीरबाला का पालन कर रहे थे कि अचानक उनकी माँ सख्त बीमार पड़ गयीं दो साल तक बीमारी चलती रही। बहुत खर्च हुआ और पिता पर कर्ज़ चढ़ गया। माँ की बीमारी और कर्ज़ से वे मन से टूट से गये और स्वयं भी बीमार पड़ गये। 1939 में उनकी मृत्यु हो गई।

धर्मवीर भारती को पाठ्य–पुस्तकों के अलावा कविता पुस्तकें तथा अंग्रेज़ी उपन्यास पढ़ने का बेहद शौक़ जागा। स्कूल ख़त्म होते ही घर में बस्ता पटक कर वाचनालय में भाग जाते वहाँ देर शाम तक किताबें पढ़ते रहते। इंटरमीडियेट में पढ़ रहे थे कि गांधी जी के आह्वान पर पढ़ाई छोड़ दी ओर आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़े। सुभाष के प्रशंसक थे, बचपन से ही शस्त्रों के प्रति आकर्षण भी जाग उठा था सो हर समय हथियार साथ में लेकर चलने लगे और 'सशस्त्र क्रांतिकारी दल' में शामिल होने के सपने मन में सँजोने लगे, पर अंततः मामा जी के समझाने बुझाने के बाद एक वर्ष का नुक़सान करने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय में स्नातक की पढ़ाई के लिए दाख़िला लिया। कोर्स की पढ़ाई के साथ साथ उन्हीं दिनों शैली, कीट्स, वड्र्सवर्थ, टॅनीसन, एमिली डिकिन्सन तथा अनेक फ्रांसीसी, जर्मन और स्पेन के कवियों के अंग्रेज़ी अनुवाद पढ़े, एमिल ज़ोला, शरदचंद्र, गोर्की, क्युप्रिन, बालज़ाक, चार्ल्स डिकेन्स, विक्टर हयूगो, दॉस्तोयव्स्की और तॉल्सतोय के उपन्यास ख़ूब डूब कर पढ़े।

अध्ययन–अध्यापन एवं साहित्यिक यात्रा :

घर और स्कूल से प्राप्त आर्यसमाजी संस्कार, इलाहाबाद और विश्वविद्यालय का साहित्यिक वातावरण, देश भर में होने वाली राजनैतिक हलचलें, बाल्यावस्था में ही पिता की मृत्यु और उससे उत्पन्न आर्थिक संकट, इन सबने उन्हें अतिसंवेदनशील, तर्कशील बना दिया। उन्हें जीवन में दो ही शौक थे – अध्ययन और यात्रा। भारती के साहित्य में उनके विशद अध्ययन और यात्रा–अनुभवों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है:

जानने की प्रक्रिया में होने और जीने की प्रक्रिया में जानने वाला मिजाज़ जिन लोगों का है उनमें मैं अपने को पाता हूँ। (ठेले पर हिमालय)

उन्हें आर्यसमाज की चिंतन और तर्कशैली भी प्रभावित करती है और रामायण, महाभारत और श्रीमद्भागवत भी। प्रसाद और शरत्चन्द्र का साहित्य उन्हें विशेष प्रिय था। आर्थिक विकास के लिए मार्क्स के सिद्धांत उनके आदर्श थे परंतु मार्क्सवादियों की अधीरता और मताग्रहता उन्हें अप्रिय थे। सिद्ध साहित्य उनके शोध का विषय था, उनके सटजिया सिद्धांत से वे विशेष रूप से प्रभावित थे। पश्चिमी साहित्यकारों में शीले और ऑस्कर वाइल्ड उन्हें विशेष प्रिय थे। भारती को फूलों का बेहद शौक था। उनके साहित्य में भी फूलों से संबंधित बिंब प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।

आलोचकों ने भारती जी को प्रेम और रोमांस का रचनाकार माना है। उनकी कविताओं, कहानियों और उपन्यासों में प्रेम और रोमांस का यह तत्व स्पष्ट रूप से मौजूद है। परंतु उसके साथ–साथ इतिहास और समकालीन स्थितियों पर भी उनकी पैनी दृष्टि रही है जिसके संकेत उनकी कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, नाटकों, आलोचना तथा संपादकीयों में स्पष्ट देखे जा सकते हैं। उनकी कहानियों–उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ के चित्र हैं, अंधा युग में स्वातंत्र्योत्तर भारत में आई मूल्यहीनता के प्रति चिंता है। उनका बल पूर्व और पश्चिम के मूल्यों, जीवन–शैली और मानसिकता के संतुलन पर है, वे न तो किसी एक का अंधा विरोध करते हैं न अंधा समर्थन, परंतु क्या स्वीकार करना और क्या त्यागना है, इसके लिए व्यक्ति और समाज की प्रगति को ही आधार बनाना होगा–

पश्चिम का अंधानुकरण करने की कोई जरूरत नहीं है, पर पश्चिम के विरोध के नाम पर मध्यकाल में तिरस्कृत मूल्यों को भी अपनाने की जरूरत नहीं है।

उनकी दृष्टि में वर्तमान को सुधारने और भविष्य को सुखमय बनाने के लिए आम जनता के दुख–दर्द को समझने और उसे दूर करने की आवश्यकता है। दुख तो उन्हें इस बात का है कि आज 'जनतंत्र' में 'तंत्र' शक्तिशाली लोगों के हाथों में चला गया है और 'जन' की ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। अपनी रचनाओं के माध्यम से इसी 'जन' की आशाओं, आकांक्षाओं, विवशताओं, कष्टों को अभिव्यक्ति देने का प्रयास उन्होंने किया है।

स्नातक में हिन्दी में सर्वाधिक अंक मिलने पर प्रख्यात 'चिंतामणि गोल्ड मैडल' मिला। स्नातकोत्तर अंग्रेज़ी में करना चाहते थे पर इस मैडल के कारण डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के कहने पर उन्होंने हिन्दी में नाम लिखा लिया। स्नातकोत्तर की पढ़ाई करते समय 'मार्क्सवाद' का उन्होंने धुंआधार अध्ययन किया। 'प्रगतिशील लेखक संघ' के स्थानीय मंत्री भी रहे लेकिन कुछ ही समय बाद साम्यवादियों की कट्टरता तथा देशद्रोही नीतियों से उनका मोहभंग हुआ। तभी उन्होंने छहों भारतीय दर्शन, वेदांत तथा बड़े विस्तार से वैष्णव और संत साहित्य पढ़ा और भारतीय चिंतन की मानववादी परम्परा उनके चिंतन का मूल आधार बन गयी।

स्नातक, स्नातकोत्तर की पढ़ाई ट्युशनों के सहारे चल रही थी। उन्हीं दिनों कुछ समय श्री पद्मकांत मालवीय

के साथ 'अभ्युदय' में काम किया, इलाचन्द्र जोशी के साथ 'संगम' में काम किया। प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्यापन के दौरान 'हिंदी साहित्य कोश' के सम्पादन में सहयोग दिया। निकष पत्रिका निकाली तथा 'आलोचना' का सम्पादन भी किया। कुछ समय तक 'हिंदुस्तानी एकेडेमी' में भी काम किया। उन्हीं दिनों ख़ूब कहानियाँ भी लिखीं। 'मुर्दों का गाँव' और 'स्वर्ग और पृथ्वी' नामक दो कहानी संग्रह छपे। छात्र जीवन में भारती पर शरत चंद्र चट्टोपाध्याय, जयशंकर प्रसाद और ऑस्कर वाइल्ड का बहुत प्रभाव था। उन्हीं दिनों वे माखनलाल चतुर्वेदी के सम्पर्क में आये और उन्हें पिता तुल्य मानने लगे। दादा माखनलाल चतुर्वेदी ने भारती को बहुत प्रोत्साहित किया।

शोधकार्य पूरा करने के बाद वहीं विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक के रूप में नियुक्ति हो गए। देखते ही देखते बहुत लोकप्रिय अध्यापक के रुप में उनकी प्रशंसा होने लगी। उसी दौरान 'नदी प्यासी थी' नामक 'एकांकी नाटक संग्रह' और 'चाँद और टूटे हुए लोग' नाम से कहानी संग्रह छपे। 'ठेले पर हिमालय' नाम से ललित रचनाओं का संग्रह छपा और शोध प्रबंध 'सिद्ध साहित्य' भी छप गया। मौलिक लेखन की गति बड़ी तेज़ी से बढ़ रही थी। साथ ही अध्ययन भी पूरी मेहनत से किया जाता रहा। उस दौरान 'अस्तित्ववाद' तथा पश्चिम के अन्य नये दर्शनों का विशद अध्ययन किया। रिल्के की कविताओं, कामू के लेख और नाटकों, ज्याँ पॉल सार्त्र की रचनाओं और कार्ल मार्क्स की दार्शनिक रचनाओं में मन बहुत डूबा। साथ ही साथ महाभारत, गीता, विनोबा और लोहिया के साहित्य का भी गहराई से अध्ययन किया। गांधीजी को नयी दृष्टि से समझने की कोशिश की। भारतीय संत और सूफ़ी काव्य और विशेष रूप से कबीर, जायसी और सूर को परिपक्व मन और पैनी हो चुकी समझ के साथ पुनः और समझा।

इसी बीच 1954 में श्रीमती कौशल्या अश्क द्वारा सुझाई गई एक पंजाबी शरणार्थी लड़की 'कांता कोहली' से विवाह हो गया। संस्कारों के तीव्र वैषम्य के कारण वह विवाह असफल रहा। बाद में सम्बंध विच्छेद हो गया। लेखन का काम अबाध चल रहा था। 'सात गीत वर्ष', 'अंधायुग', 'कनुप्रिया' और 'देशांतर' प्रकाशित हो चुके थे। कुछ ही समय बाद बम्बई से एक प्रस्ताव 'धर्मयुग' के संपादन का आया। 'निकष' को आगे न चला पाने की कसक मन में थी ही, संपादन की ललक ने प्रस्ताव पर विचार किया और विश्वविद्यालय से एक वर्ष की छुट्टी लेकर 1960 मे बम्बई चले आये।

धर्मयुग के संपादन में नये क्षितिज नज़र आने लगे, साहित्यिक लेखन से इतर अपने देश के लिये बहुत कुछ बड़े काम किये जा सकते हैं यह समझ में आने लगा तो विश्वविद्यालय की नौकरी से त्यागपत्र देकर पूरे समर्पण के साथ धर्मयुग के संपादन में ध्यान केंद्रित किया। इस दौरान एक अत्यंत शिक्षित और संभ्रांत परिवार में जन्मी इलाहाबाद विश्वविद्यालय की शोध छात्रा जो कलकत्ता के 'शिक्षायतन कॉलेज' में हिन्दी की प्राध्यापक बन चुकी थी, उससे विवाह किया। यही 'पुष्प लता शर्मा' बाद में पुष्पा भारती नाम से प्रख्यात हुईं।

धर्मवीर भारती ने अपनी रचनाओं में परिमार्जित खड़ीबोली; मुहावरों, लोकोक्तियों, देशज तथा विदेशी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है। 'व्यक्ति स्वातंत्र्य' इनकी कविता का केंद्र बिंदु है। आलोचकों ने इनके प्रारंभिक काव्य संग्रह ठंडा लोहा को कैशोर्य भावुकता का काव्य का है। इनकी शैली में प्रमुख हैं भावात्मक, वर्णनात्मक, शब्द चित्रात्मक, आलोचनात्मक एवं हास्य–व्यंग्यात्मक।

मुख्य लेख : धर्मयुग

धर्मवीर भारती के द्वारा संपादित 'धर्मयुग' पत्रकारिता

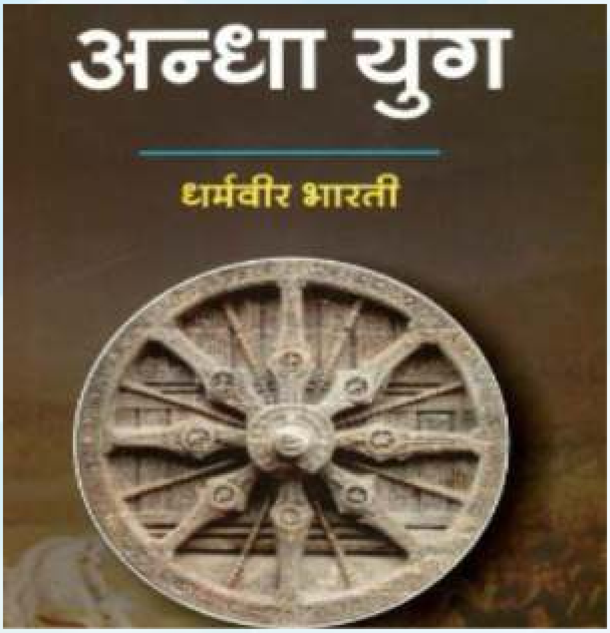

की कसौटी बन चुका है। आज के पत्रकारिता के विद्यार्थी उनकी शैली को 'धर्मवीर भारती स्कूल ऑफ़ जर्नलिज़्म' के नाम से जानते हैं। सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, खेलकूद, साहित्यिक सभी पक्षों को समेटते हुए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर हर अंक में सामग्री दी जाती थी। बच्चों और महिलाओं के लिये भी रोचक और ज्ञानप्रद सामग्री 'धर्मयुग' की अतिरिक्त विशेषता थी। उच्चतम स्तर का निर्वाह करते हुए असाधारण लोकप्रियता के साथ लाखों की संख्या में सर्वाधिक बिक्री के आँकड़े किसी चमत्कार से कम नहीं थे। धर्मयुग को पत्रकारिता के आकाश छूती ऊँचाइयों तक पहुंचा कर सत्ताईस वर्षों तक लगातार पूरी एकाग्रता के साथ काम करने के उपरांत 1987 में अवकाश ग्रहण कर लिया।

यात्रा–अनुभव :

- 1961 में 'कॉमनवेल्थ रिलेशन्स कमेटी' के आमंत्रण पर प्रथम विदेश यात्रा – इंग्लैंड तथा यूरोप के कई देश।
- 1962 में 'पश्चिम जर्मन सरकार' के आमंत्रण पर जर्मनी गये।
- 1966 में 'भारतीय दूतावास' के निमंत्रण पर इंडोनेशिया तथा थाइलैंड गये।
- 1971 मुक्तिवाहिनी के साथ बाँग्लादेश की गुप्त यात्रा करने के बाद क्रांति का आँखों देखा वर्णन लिखा।
- 1971 में भारत–पाक युद्ध के दौरान भारतीय सेना के साथ स्वयं युद्ध क्षेत्र में जा कर वास्तविक युद्ध होते देखा और विस्तृत रिपोर्ताज लिखा।
- 1974 मॉरिशस यात्रा के दौरान भारतीय मूल की जनता से सीधा सम्पर्क करके 'धर्मयुग' का जो अंक निकाला, उससे दोनों देशों के बीच मज़बूत सांस्कृतिक पुल बना।
- 1976 पुनः मॉरिशस यात्रा की।
- 1978 'चीन सरकार' के आमंत्रण पर चीन और सिंगापुर की यात्रा की।
- 1990 अमरीका की निजी यात्रा की।

प्रमुख रचनाएं :

- कहानी संग्रह : मुर्दों का गाँव (1946), स्वर्ग और पृथ्वी (1949), चाँद और टूटे हुए लोग (1955), बंद गली का आखिरी मकान (1969), साँस की कलम से, समस्त कहानियाँ एक साथ
- काव्य रचनाएं : ठंडा लोहा (1952), सात गीत वर्ष (1959), कनुप्रिया (1959), सपना अभी भी (1993), आद्यन्त (1999), देशांतर (1960)
- उपन्यास: गुनाहों का देवता (1949), सूरज का सातवां घोड़ा (1952), ग्यारह सपनों का देश, प्रारंभ व समापन
- निबंध संग्रह : ठेले पर हिमालय (1958), पश्यन्ती (1969), कहनी–अनकहनी (1970), कुछ चेहरे कुछ चिन्तन (1995), शब्दिता (1977), मानव मूल्य और साहित्य (1960)

- एकांकी व नाटक : नदी प्यासी थी, नीली झील, आवाज़ का नीलाम आदि
- पद्य नाटक : अंधा युग (1954)
- आलोचना : प्रगतिवाद : एक समीक्षा, मानव मूल्य और साहित्य
- यात्रा विवरण : यात्रा चक्र (1994)
- रिपोर्ताज : मुक्त क्षेत्रे–युद्ध क्षेत्रे (1973), युद्ध यात्रा (1972)
- अनुवाद : ऑस्कर वाइल्ड की कहानियाँ (1946), देशांतर (21 देशों की आधुनिक कवितायें) (1960)
- मृत्यु के पश्चात प्रकाशित : धर्मवीर भारती की साहित्य साधना (संपादन पुष्पा भारती) 2001, धर्मवीर भारती से साक्षात्कार (संपादन पुष्पा भारती) 1998, अक्षर अक्षर यज्ञ (पत्र : संपादन पुष्पा भारती) 1998
- संपादन : अभ्युदय, संगम, हिंदी साहित्य कोष (कुछ अंश), आलोचना, निकष, धर्मयुग

1989 में हृदय रोग से गंभीर रूप से बीमार हो गये। बम्बई अस्पताल के डॉ. बोर्जेस के अथक प्रयासों और गहन चिकित्सा के बाद बच तो गये किंतु स्वास्थ्य फिर कभी पूरी तरह सुधरा नहीं। कई प्रकार के तनावों को झेलते हुए सत्ताईस बरस की रात और दिन की बेइंतिहा दिमाग़ी मेहनत से शरीर काफ़ी अशक्त हो चुका था। वे केवल अद्भुत इच्छा शक्ति के साथ काम करते रहे थे। अंतत: 4 सितंबर 1997 को नींद में ही मृत्यु को वरण कर लिया।

पुरस्कार एवं सम्मान :
1972 में पद्मश्री से अलंकृत डॉ. धर्मवीर भारती को अपने जीवन काल में अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए जिसमें से प्रमुख हैं

- संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली की सदस्यता – 1967
- हल्दीघाटी श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार (राजस्थान) – 1984
- साहित्य अकादमी रत्न, दिल्ली की सदस्यता – 1985
- संस्था सम्मान, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान –1986
- सर्वश्रेष्ठ नाटककार पुरस्कार (संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली) –1988
- सर्वश्रेष्ठ लेखक सम्मान (महाराणा मेवाड़ फ़ाउंडेशन, राजस्थान) –1988
- गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार (केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा) –1989
- राजेन्द्र प्रसाद शिखर सम्मान (बिहार सरकार) – 1989
- भारत भारती सम्मान (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान) – 1990
- महाराष्ट्र गौरव (महाराष्ट्र सरकार) –1990
- साधना सम्मान (केडिया हिन्दी साहित्य न्यास, मध्य प्रदेश) –1991
- महाराष्ट्राच्या सुपुत्रांचे अभिनंदन (वसंतराव नाईक प्रतिष्ठान, महाराष्ट्र) –1992
- व्यास सम्मान (के. के. बिड़ला फ़ाउंडेशन, दिल्ली) –1994
- शासन सम्मान (उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ) – 1996
- उत्तर प्रदेश गौरव (अभियान संस्थान, बम्बई) – 1997

*****

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या – सदस्य कार्यालयों की सूची

सन्योजक : बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

क्र. सं.	सदस्य कार्यालय/ विद्यालय का नाम	कार्यालय/विद्यालय प्रमुख का नाम, पदनाम व संपर्क विवरण	राजभाषा प्रभारी/संपर्क अधिकारी का नाम, पदनाम व संपर्क विवरण
केंद्र सरकार के अधीनस्थ कार्यालय एवं विद्यालय			
1.	**आकाशवाणी** कार्यालय, अयोध्या	**श्री राम मूर्ति मिश्रा** निदेशक (अभियांत्रिकी) faizabad@air.org.in +91 94151 16395	**श्री संजयधर द्विवेदी** कार्यक्रम अधिशासी airfzd@rediffmail.com +91 94522 88600
2.	**केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल** कमाण्डेंट कार्यालय, 63 वाहिनी, अयोध्या	**श्री छोटे लाल** कमाण्डेंट (कमांडिंग ऑफिसर) co63bn@crpf.gov.in +91 94509 16404	**श्री एस. एन. पांडेय** ए. एस. आई. co63bn@crpf.gov.in +91 88661 49558
3.	**केन्द्रीय विद्यालय** फैज़ाबाद कैंट अयोध्या	**श्री अमित श्रीवास्तव** प्राचार्य kafaizabad@yahoo.co.in +91 94738 98869	**श्री रजत कुमार** पी. जी. टी, हिंदी kafaizabad@yahoo.co.in +91 98897 30152
4.	**छावनी परिषद, कार्यालय** फैज़ाबाद छावनी, अयोध्या	**श्री यशपाल सिंह,** आई. डी. ई. एस. (मुख्य अधिशासी अधिकारी) cbfaizabad@digest.org +91 9839044960	**श्री संतोष कुमार चटर्जी** राजभाषा प्रतिनिधि cbfaizabad@digest.org +91 6388588780
5.	**जवाहर नवोदय विद्यालय** डाभासेमर, अयोध्या	**श्री कृष्ण कुमार मिश्रा** प्राचार्य jnvfaizabad@gmail.com +91 95328 84651	**श्री मयंक तिवारी** पी.जी.टी. हिंदी jnvfaizabad@gmail.com +91 95328 84651
6.	**भारत संचार निगम लिमि** कार्यालय–महाप्रबंधक दूरसंचार अयोध्या	**श्री प्रभांश यादव** महाप्रबंधक gmtdfy@bsnl.co.in +91 94152 22217	**श्री जगन्नाथ तिवारी** कनिष्ठ हिंदी अनुवादक Jntbsnl@gmail.com +91 94545 87238
7.	**भारतीय खाद्य निगम** मण्डल कार्यालय, अयोध्या	**श्री महेंद्र सिंह** मण्डल प्रबंधक faizaup.fci@gov.in +91 90765 00141	**श्री संजीव कुमार** प्रबंधक (हिंदी) faizaup.fci@gov.in +91 99195 19557

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या – सदस्य कार्यालयों की सूची

8.	**भारतीय डाक** कार्यालय प्रवर अधीक्षक अयोध्या मण्डल, अयोध्या	**श्री पी. के. सिंह** प्रवर अधीक्षक–डाकघर dofaizabad.up@indiapost.gov.in +91 9415688850	**श्री पंकज कुमार सिंह** संपर्क अधिकारी dofaizabad.up@indiapost.gov.in +91 8115787140
9.	**राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय** क्षेत्र संकार्य प्रभाग उप क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या	**श्री पवन कुमार गुप्ता** वरिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी fodsro.fzd@gmail.com +91 63881 49407	**श्री ध्रुव पाण्डेय** कनिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी fodsro.fzd@gmail.com +91 88961 72236
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक एवं बीमा कंपनियाँ (प्रशासनिक कार्यालय)		
10.	**दि न्यू इंडिया एश्योरेंश कं. लिमि** मण्डल कार्यालय, अयोध्या	**श्री गुलशन वर्मा** मंडल प्रबंधक gulshan.verma@newindia.co.in +91 90331 60656	**श्री ओ.पी. सिंह** संपर्क अधिकारी (राजभाषा) singh.om@newindia.co.in +91 75308 00686
11.	**पंजाब नैशनल बैंक** मण्डल कार्यालय, अयोध्या	**श्री के. एल. बैरवा** मंडल प्रमुख cofzd@pnb.co.in +91 90040 35058	**श्री सुनील कुमार पटेल**, प्रबंधक (राजभाषा) cofzrajbhasha@pnb.co.in / cofzdraj@pnb.co.in +91 80091 19900
12.	**बैंक ऑफ़ बड़ौदा** क्षेत्रीय कार्यालय–अम्बेडकरनगर	**श्री अरविन्द कुमार पांडेय**, क्षेत्रीय प्रमुख rm.ambedkarnagar@bank ofbaroda.co.in +91 63891 47000	**श्री नीरज कुमार सिंह**, प्रबंधक (राजभाषा) rajbhasha.ambedkarnagar@bank ofbaroda.co.in +91 95549 68319
13.	**बैंक ऑफ़ बड़ौदा** क्षेत्रीय कार्यालय–अयोध्या	**श्री अनिल कुमार झा**, अध्यक्ष नराकास–अयोध्या एवं क्षेत्रीय प्रमुख rm.faizabad@bankofbaroda.co.in +91 95549 68300	**श्री नीरज कुमार सिंह**, सदस्य सचिव, नराकास–अयोध्या एवं प्रबंधक (राजभाषा) rajbhasha.faizabad@bankofbaroda.co.in +91 95549 68319
14.	**भारतीय जीवन बीमा निगम** मण्डल कार्यालय, अयोध्या	**श्री चंद्र सिंह दासपा** वरिष्ठ मंडल प्रबंधक sdm.faizabad@licindia.com +91 98911 44890	**श्री अजय कुमार श्रीवास्तव** प्रशासनिक अधिकारी pir.faizabad@licindia.com +91 94157 19476
15.	**भारतीय स्टेट बैंक** क्षेत्रीय व्यवसाय कार्यालय, अयोध्या	**श्री संजीव यादव** क्षेत्रीय प्रमुख sbi.63211@sbi.co.in –––	**श्री ए. आर. सागर** प्रबंधक sagar.2512@sbi.co.in +91 99187 51593
16.	**यूको बैंक** अंचल कार्यालय, अयोध्या	**श्री अमित भारद्वाज** सहायक महाप्रबंधक zo.ayodhya@ucobank.co.in +91 81300 36492	**श्री मनोज कुमार सिंह** वरिष्ठ प्रबंधक zoayodhya.hrm@ucobank.co.in +91 70035 58561
17.	**यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंश कं.लिमि** मण्डल कार्यालय, अयोध्या	**श्री आशीष कुमार शुक्ला** वरिष्ठ मंडल प्रबंधक ashishshukla@uiic.co.in +91 98397 00828	**श्री डी.के. सिंह** एएमडी dilipkrsingh@uiic.co.in +91 94150 48183

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या – सदस्य कार्यालयों की सूची

18.	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या	श्री हिमांशु मिश्र क्षेत्र प्रमुख rhayodhya@unionbankofindia.com +91 99870 08677	श्री रतन कुमार सिंह वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) rajbhasha.roayodhya@unionbankofindia.bank +91 70084 07571
19.	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या	श्री सुरेश कुमार सिंह क्षेत्रीय प्रमुख rmayodro@centralbank.co.in +91 83037 14301	श्री सुरेन्द्र सिंह यादव प्रबंधक (राजभाषा) hindiayodro@centralbank.co.in +91 83037 14296
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक एवं बीमा कंपनियाँ (शाखा कार्यालय)			
20.	आई डी बी आई बैंक लिमि मुख्य शाखा	श्री सरदेंदु विमल सिंह शाखा प्रबंधक ibkl0000398@idbi.co.in +91 96194 86077	सुश्री गरिमा श्रीवास्तव संपर्क अधिकारी ibkl0000398@idbi.co.in +91 70075 92627
21.	इंडियन ओवरसीज़ बैंक मुख्य शाखा	श्री चंदन दुबे शाखा प्रमुख iob.1429@iob.in +91 99185 66445	श्री संकेत श्रीवास्तव अधिकारी iob.1429@iob.in +91 88381 95586
22.	इंडियन बैंक मुख्य शाखा	श्री सतीश चंद्र पाठक वरिष्ठ शाखा प्रबंधक faizabad@indianbank.co.in +91 88811 18099	श्री शेखर श्रीवास्तव वरिष्ठ प्रबंधक faizabad@indianbank.co.in +91 94530 35090
23.	केनरा बैंक मुख्य शाखा	श्री सौरभ शुक्ल वरिष्ठ प्रबंधक cb1641@canarabank.com +91 81730 07727	श्री शशिकांत प्रबंधक (राजभाषा) olcoluck@canarabank.com +91 91302 52061
24.	नेशनल इंश्योरेंश कं. लिमि शाखा कार्यालय	श्री राम राज वरिष्ठ शाखा प्रबंधक ram.raj@nic.co.in +91 94519 04441	श्री धर्मेंद्र कुमार प्रशासनिक अधिकारी 450305@nic.co.in +91 94528 38077
25.	पंजाब एंड सिंध बैंक मुख्य शाखा	श्री सुनिल कुमार पांडे शाखा प्रबंधक f1375@psb.co.in +91 81275 26708	
26.	बैंक ऑफ इंडिया मुख्य शाखा	श्री संतोष यादव मुख्य प्रबंधक faizabad.varanasi@bankofindia.co.in +91 87006 46477	श्री अशोक कुमार प्रबंधक faizabad.varanasi@bankofindia.co.in +91 95910 31824
27.	बैंक ऑफ महाराष्ट्र मुख्य शाखा	श्री शैलेश कुमार शाखा प्रबंधक bom1704@mahabank.co.in +91 85742 34123	श्रीमती शानो द्विवेदी राजभाषा प्रभारी bom1704@mahabank.co.in +91 77068 32238

समिति के मंच से प्रदत्त 'तुलसी भाषा सम्मान', 2022

श्री मृगेंद्र राज जी को 'तुलसी भाषा सम्मान योजना' के तहत
रूपये 21,000/– के चेक एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित करते हुए आदरणीय मंचासीन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
अयोध्या

भारतीय स्टेट बैंक

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया

यूनियन बैंक Union Bank of India
आन्ध्रा Andhra
कार्पोरेशन Corporation

बैंक ऑफ इंडिया

केनरा बैंक Canara Bank
सिंडिकेट Syndicate

भारतीय डाक Indian Post

बैंक ऑफ महाराष्ट्र

यूको बैंक

इंडियन बैंक Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD

pnb
Oriental United
Together for the better

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

युनाइटेड इंडिया
UNITED INDIA

नेशनल इन्श्योरेन्स
National Insurance

IDBI BANK

THE NEW INDIA ASSURANCE CO. LTD.

एन एस एस ओ
NSSO

भारतीय खाद्य निगम

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

छावनी परिषद्, फैजाबाद
Cantonment Board, Faizabad

बीएसएनएल
भारत को जोड़े

आकाशवाणी

संयोजक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
विजया VIJAYA
देना DENA

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या